RNI NO. DELHIN/2012/47450

मासिक
साहित्य पत्रिका

मई 2024

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

कवितावली

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

मासिक
साहित्य पत्रिका

कवितावली

भारत ग्रेट ब्रिटेन इंडोनेशिया अमेरिका

राजीव निशाना
समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

प्रेम विज
संयुक्त संपादक

राजीव निशाना
समूह संपादक

धन्यवाद संदेश

मैं कवितावली पत्रिका के मई अंक में योगदान देने वाले सभी कवियों एवं साहित्यकारों को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव को शब्दों का रूप दिया और पत्रिका को अलंकृत करने का सराहनीय कार्य किया है।

अप्रैल माह की कवितावली का विमोचन डॉक्टर आचार्य विक्रमादित्य जी के द्वारा किया गया तथा मुझे अप्रैल अंक में प्रकाशित हुई रचनाएँ पढ़ कर मूल्यवान ज्ञान तथा जीवन दर्शन मिला। लेकिन इन सब में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी इस साहित्यिक मासिक पत्रिका टीम जिनमें विशेष रूप से मुख्य संपादक, सुरेश पुष्पाकर तथा प्रेम विज जी के समर्थन व उनके अथक प्रयासों के लिए 'धन्यवाद'।

अंत में, सभी साहित्यकार जिनका इस पत्रिका में भरपूर योगदान रहा अत: सभी पाठकों जिनकी रुचि हिन्दी साहित्य में है, पुन: उनका आभार प्रकट करता हूं।

धन्यवाद

आपका भवदीय

राजीव निशाना

समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

संपादक की कलम से

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में एक मात्र जीवंत सभ्यता है जो आधुनिक युग में भी अपने अस्तित्व को समेटे हुए समय के साथ धीरे धीरे अपने सफर पर अग्रसर है। पुरातन काल से ऋषि मुनियों द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान एवं विज्ञान पर किए गये शोध आज हमारी विरासत का हिस्सा है। भाषा किसी भी सभ्यता अथवा संस्कृति की केवल पहचान भर नहीं होती अपितु अपनी विरासत को संभालने और उसे आगे लेकर चलने में एक सारथी के रूप में कार्य करती है।

विश्व आज भारत की ओर बड़ी आशा और अपेक्षा भरी नज़रों से देख रहा है। इसी संदर्भ में मुझे यह बात आप सभी के साथ साझा करने में गर्व की अनुभूति हो रही है कि विश्व के हर कोने जहाँ भी भारतीय मूल के सनातनी विद्यमान हैं, वहाँ अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार में अग्रसर हैं। हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए जो अध्यापक के रूप में विश्व में जहाँ भी हों मेरा उनको नमन है। इसके साथ ही कवितावली का यह प्रयास कि विश्व भर से साहित्यकार अपनी उपस्थिति इस पत्रिका में अपनी सुन्दर एवं सार्थक रचनाओं द्वारा दर्ज करवाएँ, हम उस ओर अग्रसर एवं प्रयासरत हैं।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सेवारत सभी कवियों एवम् साहित्यकारों की इस साधना को पुनः वन्दन।

आपका भवदीय
सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

पत्रिका यूनाइटेड किंगडम में डिज़ाइन की गई है

कवि एवं साहित्यकार

क्र. सं	नाम	स्थान	पृष्ठ संख्या
01	अलका कांसरा	....चण्डीगढ़	06
02	प्रेम विज	....चण्डीगढ़	07
03	निधि मलिक	....फरीदाबाद, हरियाणा	08
04	डॉ० अनीश गर्ग	....चण्डीगढ़	09
05	विजय कपूर	....चण्डीगढ़	10
06	डॉ० विनोद कुमार शर्मा	....चण्डीगढ़	11
07	विमला गुगलानी	....चण्डीगढ़	12
08	गणेश दत्त बजाज	....चण्डीगढ़	13
09	आशीष शर्मा	....इंडोनेशिया	14
10	सुभाष भास्कर	....चण्डीगढ़	15
11	साहिल	....दिल्ली	16
12	अन्नू रानी शर्मा	....चण्डीगढ़	17
13	डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक	....लुधियाना, पंजाब	18
14	राशिद हुसैन	....मुरादाबाद, उ.प्र.	19
15	वीणा विज "उदित"	....जालंधर, पंजाब	20
16	बाल कृष्ण गुप्ता "सागर"	....पंचकूला, हरियाणा	21
17	राजेंद्र धवन	....चण्डीगढ़	22
18	कर्मवीर मित्तल	....दिल्ली	23
19	सत्य मोहन "सत्यम्"	....ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.	24
20	डॉ० मुक्ता	....गुरुग्राम, हरियाणा	25
21	डॉ० जवाहर धीर	....फगवाड़ा, पंजाब	26
22	गीता मंजरी मिश्र "सतपथी"	....दिल्ली	27
23	विजय कुमार	....अम्बाला छावनी, हरियाणा	28
24	आशिमा राज वार्ष्णेय	....बैंगलोर, कर्नाटक	29
25	निर्लेप होरा	....दिल्ली	30
26	शिल्पा गुप्ता	....दिल्ली	31
27	रश्मी शर्मा	....मोहाली, पंजाब	32
28	डॉ० प्रज्ञा शारदा	....चण्डीगढ़	33
29	संतोष गर्ग "तोष"	....पंचकूला, हरियाणा	34
30	डॉ० निशा भार्गव	....चण्डीगढ़	35
31	पालम सैनी	....गाज़ियाबाद, उ.प्र.	36
32	डॉ० गीता गंगोत्री	....झारखण्ड	37
33	डॉ० संगीता शर्मा कुंद्रा "गीत"	....चण्डीगढ़	38
34	तरुणा पुंडीर "तरुनिल"	....दिल्ली	39
35	डॉ० दलजीत कौर	....चण्डीगढ़	40
36	बी एल गुप्ता	....गाज़ियाबाद, उ.प्र.	41
37	नीतू गर्ग	....ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.	42
38	सुरेश पुष्पाकर	....लीसेस्टर, इंग्लैण्ड	43
39	आरके भगत	....चण्डीगढ़	44
40	नीरू मित्तल "नीर"	....पंचकूला, हरियाणा	45
41	सुषमा मल्होत्रा	....न्यूयार्क, अमेरिका	46

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

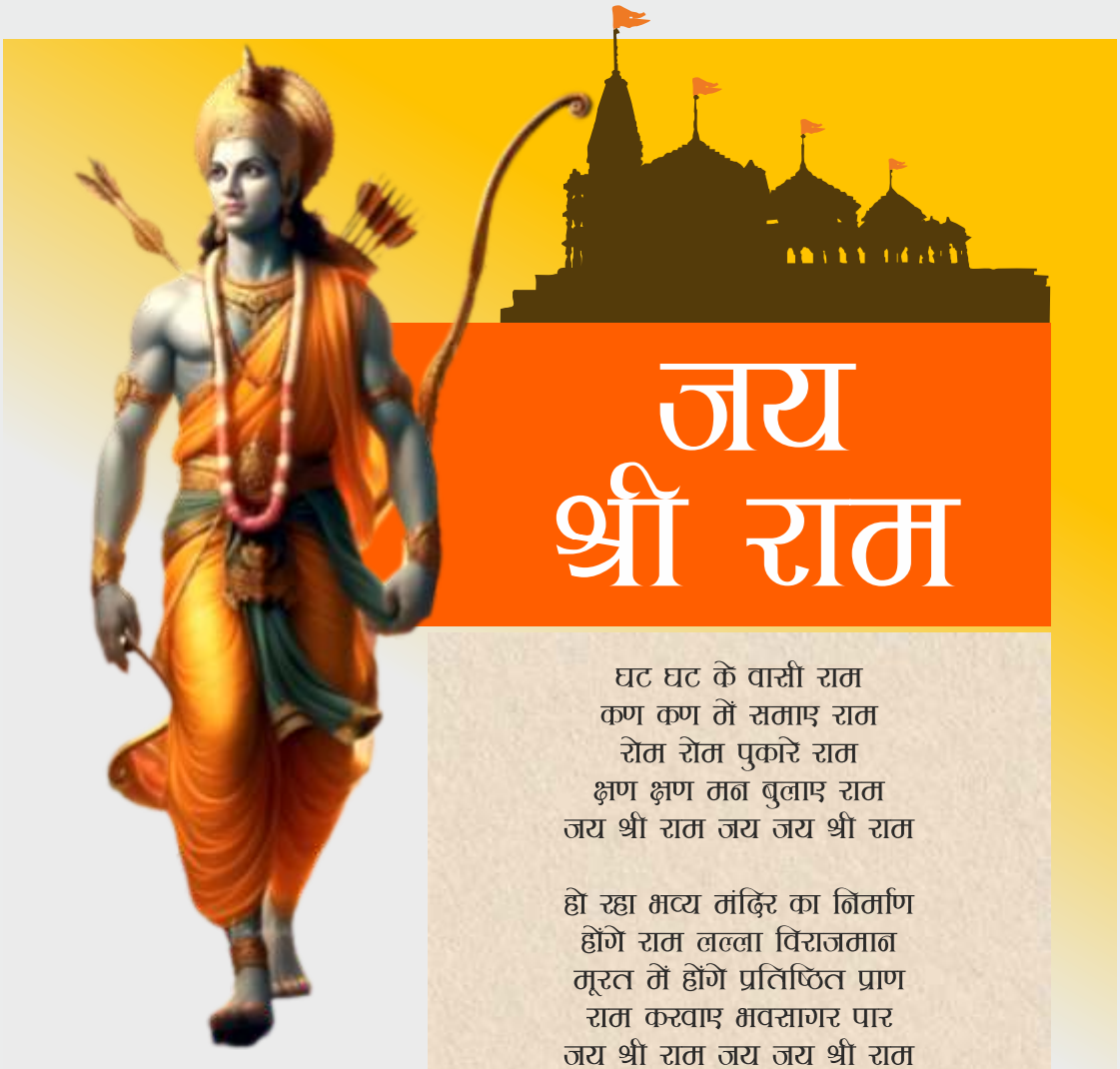

जय श्री राम

घट घट के वासी राम
कण कण में समाए राम
रोम रोम पुकारे राम
क्षण क्षण मन बुलाए राम
जय श्री राम जय जय श्री राम

हो रहा भव्य मंदिर का निर्माण
होंगे राम लल्ला विराजमान
मूरत में होंगे प्रतिष्ठित प्राण
राम करवाए भवसागर पार
जय श्री राम जय जय श्री राम

घर घर में है हर्षोल्लास
घर आंगन में दिये का उजास
घर घर पहुंचा अक्षत प्रसाद
जन मानस के होंठो पर अरदास
जय श्री राम जय जय श्री राम

आ गए रघुनंदन अयोध्या धाम
समाप्त हुआ सदियों का बनवास
अयोध्यावासी रचा रहे महारास
ऊपर बैठे मुस्कुरा रहे तुलसीदास
जय श्री राम जय जय श्री राम

अजर अमर अविनाशी राम
राम का ही बड़भागी नाम
सबके अंदर रौशन राम
मन मंदिर में बसते राम
जय श्री राम जय जय श्री राम
जय श्री राम जय जय श्री राम

अलका कांसरा

चंडीगढ़, भारत

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अपना-अपना दृष्टिकोण

(लघुकथाएं)

प्रेम विज

चंडीगढ़, भारत

माँ बेटे को लेकर मंदिर जा रही थी। रास्ते में बेटे ने कुछ सवाल पूछे। माँ ने उनके जवाब दिए।

'माँ, भगवान के आगे माथा क्यों टेकते हैं ?'

'क्योंकि वे बहुत महान हैं।'

'भगवान महान क्यों हैं ?'

'क्योंकि उन्होंने ही यह सारी दुनिया बनाई है और वे ही इसकी देखभाल भी करते हैं।'

'मुझे भी भगवान ने बनाया है ?'

'हाँ, बेटा।'

मंदिर पहुँच कर माँ ने बेटे को कुछ पैसे देते हुए कहा - 'ले, भगवान जी को चढ़ा दे।'

'क्यों ?'

'भगवान जी, तुझे और ज़्यादा पैसे देंगे।'

'क्या भगवान से कुछ पाने के लिए उन्हें भी रिश्वत देनी पड़ती है ?'

प्रश्न सुनकर माँ चुपचाप उसके चेहरे की ओर निहारने लगी, क्योंकि उसके पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

असली हक़दार

पिता जी की पुण्यतिथि पर प्रति वर्ष माँ जी पूजा-पाठ करवातीं और पंडित जी को भोजन करवातीं थीं। आजकल के पंडित पहले वाले तो रहे नहीं कि जितना परोस दिया, खा लिया।

पिछली बार पुण्यतिथि के अवसर पर माँ जी ने पंडित जी के ना-ना करते हुए भी अपनी संतुष्टि के लिए उनकी थाली में एक-दो पूरियाँ तथा खीर-हलवा और डाल दिया। अब बेचारा पंडित विवश था। खा सकता नहीं था। कुछ अन्न जूठा छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

उसके जाने के बाद मैंने कहा - 'माँ जी, भरे पेट पंडितों की बजाय यदि यही भोजन ज़रूरतमंद बच्चों को दिया जाए तो शायद पिताजी की आत्मा को अधिक शान्ति मिलेगी।'

माँ ने कुछ देर सोचा। फिर मेरी बात से सहमत हुए कहा - 'बेटा, तूने तो मेरी आँखें खोल दीं। तेरे पिताजी भी अन्न के अनादर के विरूद्ध थे।' अगली बार से हम वही करेंगे जो तूने कहा है।'

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

निधि मलिक

फ़रीदाबाद, भारत

गेहूँ का बूटा

मैं गेहूँ का बूटा
जिसमें से चुने जा चुके हैं दाने
एक ठुकराया हुआ, अपने ही खेत में पड़ा हूँ।
अपने ही खेत में जलने को मजबूर,
किसान कहता है खेत मेरा, फसल मेरी
मेहनत भी मेरी।
में सोचता रहा जिसे अपना खेत,
वही आज है मेरी चिता।
हवा का बवंडर उड़ा रहा है मेरी धूल,
धरती से आसमान तक।
बारिश का इन्तज़ार है जब मैं
आसमान से, फिर शांत सिमट जाऊँगा
किसी खेत में।
शांत हो जायेगी मेरी चिता॥

मैं कौन हूं

मैं कौन हूँ ?
पूछती हूँ ये सवाल अपने से;
उत्तर देता है मस्तिष्क,
मैं शरीर का आत्मा से मिलन हूँ।
हृदय कहता है मैं अनुभवों की अनुभूति हूँ।
अनगिनित लोगों की रौशनी से ऊर्जा पाकर,
अपने अक्स पर गर्वित
मैं जो कल थी, वो आज नहीं हूँ।
एक नदी की निरंतरता की तरह
हूँ भी यहाँ और नहीं भी।
बदलते स्वरूप और जुड़ते-बिछड़ते
रिश्तों की तरह,
पल-पल बदल रही हूँ।
आखिर मैं कौन हूँ ?
निरुत्तर हूँ, मौन हूँ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

डॉ० अनीश गर्ग

चंडीगढ़, भारत

दौड़

मैंने तेज़ी से
भागते-हांफते
"वक्त" को
रोककर पूछा
तुम्हें नहीं लगता
तुम पहले से
और तेज़
भागने लगे हो....
बड़ी मायूसी से
वक्त ने
जवाब दिया
"अनीश भाई"
प्रतिस्पर्धा के
दौर से गुजर रहा हूं...
आज मुझसे तेज़
भाग रही है
ज़िन्दा लाशों की
कल के लिए
सब समेटने की
होड़....
अस्तित्व को
बचाने को
मैं निरंतर रहा हूं
दौड़....

हां !... यायावर सा मैं
पंखों में परवाज़ लिए
चकाचौंध से भ्रमित सा
था उड़ने को नभ अनंत,
ना कोई छोर ना अंत,
उफ़ !
रंगरेज़ सा बाह्य जगत
भौतिकता के छद्म रंग,
यथार्थ के धरातल पर
उलझाने को मायावी से
कल्पनाओं.. स्वप्नों की
व्योम में इतराती पतंग,
और....
बाह्य जगत ठहरा ठगत,
पंख शिथिल सब खत्म,
मिथ्या विषयों से निर्मित
चंचल मटकी खूब भटकी,
धड़ाम...! अंततः चटकी,
अनायास ही मैं
कूद गया भीतर की ओर,
बन साधक सा गोताखोर,
चेतन से अवचेतन की ओर,
स्थूल से सूक्ष्म की ओर,
चक्षुओं ने साक्षात किया
अद्भुत सा भीतर दर्शन,
फीके लगे बाह्य आकर्षण,
अबोध मृग को बोध हुआ
कस्तूरी कुंडली विराजे,
मूर्ख जंगल जंगल भागे,
यायावर सा इब्नबतूता
विश्रामित होने लगा,
कर्ता.. द्रष्टा होने लगा,
और तभी.. शनैः शनैः
अन्तर्यात्रा के दौरान
मेरे भीतर का मौन बुद्ध !
इंद्रियों के चक्रव्यूह भेदता,
विषयों के सोपान लांघता,
शून्य में विलीन हो गया
और...
साधना पथ के गंतव्य पर
खुल गया स्वयं मोक्षद्वार...
हां ! स्वयं का स्वयं से
हो ही गया साक्षात्कार....

विजय कपूर

चंडीगढ़, भारत

सत्य से साक्षात्कार

प्रचंड आवेग
ग्रहण करते हुए
गुजरते हैं हम
महत्वपूर्ण द्वंद्व से
कि एहसास का उल्लास
किसी पवित्रता को छू
अवतरित हो,
किसी गली कूचे में
नंग-धड़ंग पड़ी
देह पर भी
ताकता हो चांद
आत्मीयता से,
यह जो होती हैं न
धूप से तमतमाई
अबोध आंखें,
वही बीजती हैं
प्रचंड आवेग को
सत्य से
साक्षात्कार करते हुए।

आदमी होने की पीड़ा से अवकाश

कुछ तो रहम हो
कि हम केवल
शब्दों में ही
न समझें पीड़ा को,
नेपथ्य में खड़े
अनुभव
जो बनते हैं
जिजीविषा का मूल
उनकी हथेलियों पर
उगे रहते हैं जंगल,
जिनकी नहीं होती हैं
कोई सीमाएं,
फैलता है वही जंगल
हर उस जगह
जिसे जब-जब
छूती हैं वही हथेलियां,
इस पीड़ा को
समझने के लिए
सपनों को भी
छूना होगा,
सेकना होगा
अनकही आंच को,
तब कभी मिलेगा
आदमी होने की
पीड़ा से अवकाश।

दूरगामी परिवर्तन

तुम हमेशा
इठलाती बलखाती
चलती रहीं,
वैसा ही उन्माद लिए
तुम कभी
व्यस्क नहीं हुई,
किसी भी किनारे से
नहीं किया तुमने कोई
संबंध स्थापित,
किसी पर अंतत:
मर मिट जाने
के दूरगामी परिवर्तन से
रही तुम अनभिज्ञ
कि शनै शनै
मिट रहा है
तुम्हारा अस्तित्व
किसी समंदर में,
जिसे देख रहा है
निरंतर पिघलता हुआ
तुम्हारा पहाड़।

आग्रह के विरुद्ध

आग्रह के विरुद्ध
छिटक जाने के लिए
टिके रहना,
टिके रहना
कि पाशविक परिणीति
देने लगे दस्तक,
और तुम
करने लगो नफ़रत
अपनी असली क्षमताओं से,
तुम जैसों के लिए
झिझक के बाद
बंद हो जाते है
फिर से शुरू होने
तमाम रास्ते।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

समय निकाल

डॉ० विनोद कुमार शर्मा

चंडीगढ़, भारत

बचपन से ही बोझ तले जिंदगी दबी,
जीवन में व्यस्त हो फुर्सत न मिली कभी,
नहीं पता लगे जीवन का क्या उद्देश्य,
प्रश्नों का उत्तर ढूंढे तो मिले अवश्य,
बेफिजूल प्रश्नों में उलझ जीवन बिताते,
सही रास्ते पर चलने से क्यों कतराते,
रख सही ढंग से खुद का ख्याल,
दिनचर्या में से कुछ समय निकाल ।

औरों के लिए खूब लंबी दौड़ लगाई,
जिंदगी रूबरू होकर नहीं पहचान पाई,
किसी की अहमियत को समझना जरूरी,
क्या फायदा अगर करेंगे झूठी जी हजूरी,
किसी जीव का देख दु:ख टटोलकर,
दे फायदा कभी मीठे शब्द बोलकर,
सही पथ पर अनुसरण करे चाल,
दिनचर्या में से कुछ समय निकाल ।

यह पेड़-पौधे वनस्पतियां भी हैं प्राण,
कभी तन-मन-धन का देख करके दान,
दूसरों को कष्ट देकर न ऊर्जा गवां व्यर्थ,
करता चल भला औरों का होकर समर्थ,
क्या फायदा अगर ऊंचे टीले पर खड़े,
नहीं उत्तर पाओगे अगर रहोगे अड़े,
न रख नजर पड़ा सामने औरों का माल,
दिनचर्या में से कुछ समय निकाल ।

दुनिया में रिश्ते-नाते निभाने को होते,
जो फेरते मुख समय पर जीवन भर रोते,
तन-मन को कैसे संवारना सोच जरा,
कोई सोचे बुरा तो भी कर खरा,
बैठकर एकांत में कर कर्म पर ध्यान,
डूब रही लुटिया या बढ़ रही शान,
जिंदगी है खूबसूरत न बना मकड़जाल,
दिनचर्या में से कुछ समय निकाल।

झमेला

यह तेरा यह मेरा कब तक चलेगा,
लालच का अंगार कब तक पलेगा,
किसी को यहां क्या सब कुछ मिला,
कांटो का संग कभी फूल खिला,
तन-मन स्वस्थ तो सब अपने,
अधूरे हैं वरना कर्म बिना सपने,
निराश मत हो भले पास न धेला,
चल छोड़ जिंदगी का झमेला ।

कार बंगले बैंक बैलेंस जायदाद,
किसने देखा जाने के बाद,
सदा के लिए नहीं किसी की बपौती,
कभी भूखा पेट तो कभी भरपेट रोटी,
अपने-अपने कर्मों का यहाँ खेल,
कहीं के बिछड़े तो कहीं का मेल,
कोई उड़ाए जहाज कोई चलाये ठेला,
चल छोड़ जिंदगी का झमेला ।

जब तक श्वाश सेवा को लगाना,
समय पर काम तो पड़े न पछताना,
घर से प्रेम की कर ले शुरुआत,
सुकर्म से लदा हो सदा दिन-रात,
बिना किए कर्म अगर कमाई पूंजी,
कैसे पाओगे सफल जीवन की कुंजी,
पूरी दुनिया को मान सखा सुहेला,
चल छोड़ जिंदगी का झमेला।

छल-कपट को पनपने न दे अंदर,
हृदय में विराजमान कर मंदिर,
हर घड़ी उसका ध्यान रख प्यारे,
करेगा जरूर बारे न्यारे,
सबके दु:ख को अगर अपना माना,
भूल कर न देना किसी को ताना,
अपने हैं सब नहीं कोई अकेला,
चल छोड़ जिंदगी का झमेला ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

मंगल-सूत्र
(लघुकथा)

विमला गुगलानी
चंडीगढ़, भारत

आज दो वर्षों के बाद सावित्री ने अपना गहनों का डिब्बा खोला। हरीश की मौत को दो साल होने को आए थे । तीन बच्चों का भरा पूरा परिवार है, परंतु सावित्री का अकेलापन कोई नहीं बांट सकता । चालीस बरसों का साथ कैसे भुलाया जा सकता है । जीवन तो चलता ही रहता है, बच्चे भी अपने अपने कामों में व्यस्त हो जाते है, मगर जीवन साथी की कमी को पीछे छूट गया साथी ही महसूस कर सकता है । हरीश की पंसद के सावित्री के लिए चाव से बनवाए गए कपड़े अल्मारी में बंद बाहर की हवा को तरस रहे थे । आज भी अगर कान की बाली टूट न गई होती तो सावित्री गहनों का डिब्बा न खोलती । सुबह से बहू सुधा ने कई बार बालियां बदलने के लिए कहा तो सुधा ने डिब्बा खोला ।

बालियों का दूसरा जोड़ा निकालते समय उसकी नजर मंगलसूत्र पर पड़ी तो हाथ में लेने से स्वंय को रोक नहीं पाई और आंखों से गंगा यमुना बह निकली । बड़ी मुशकिल से स्वंय पर काबू पाया । मन कर रहा था गले में पहन लें मगर समाज इसकी इजाज़त नहीं देता । तभी उसे न जाने क्या सूझी कि उसने मंगलसूत्र को कलाई पर लपेट लिया । एक पल को जैसे उसे हरीश के साथ का अहसास हुआ । आंखें बंद करके वो कुछ देर बैठी रही । उसे नई उर्जा का संचार महसूस हुआ । अल्मारी से उसने हरीश की पंसद की साड़ी निकाली और तैयार होकर पास ही के उस पार्क में घूमने चल दी जहां वो दोनों अक्सर जाया करते थे । हाथ में बंधा मंगलसूत्र जैसे हरीश का साथ ।

मन की गांठें

मन में सबके कितनी गांठे,
कुछ कच्ची, कुछ पक्की ।
कुछ इस कोने, कुछ उस कोने
कुछ तो कभी न दिखती ।
कुछ गांठे तो ऐसी होती,
काटे भी न कटती ।
पर मन के अंदर वो ,
हरदम धीरे धीरे चुभती ।
कुछ दब जाती, नजर न आती
कभी कभी फिर गुम हो जाती,
फुर्सत में जरा सा खोलने बैठो ।
जोर से और भी वो कस जाती,
मन के धागे हो रेशम से,
गांठ कभी न बनने पाए ।
उलझ सुलझ भले ही जाएं
झटपट फिर खुल जाएगें ।

बरसात के बाद

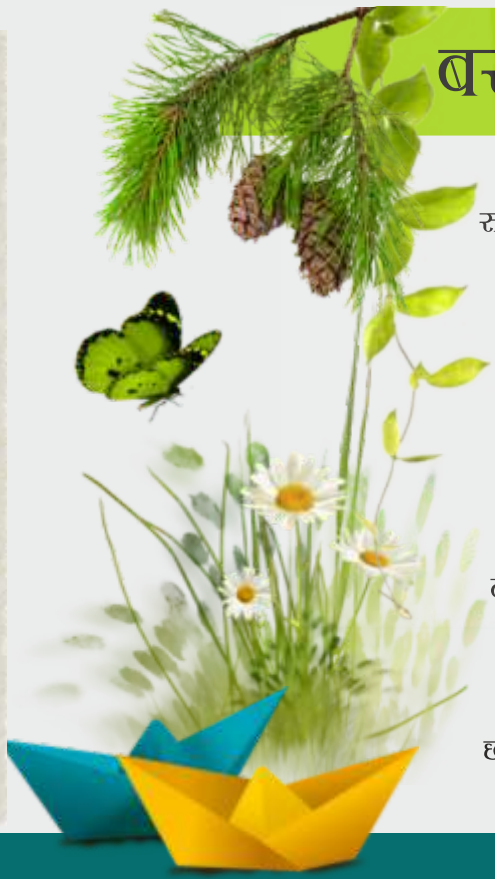

बरसात के बाद यूं लगे,
सारी कायनात धुली धुली सी ।
हर पत्ता नाचे मस्ती में,
घास पे शबनम चमके ।
फूलों पर यू आई जवानी,
डाली डाली महके ।
मिट्टी की ये सौंधी खुशबू,
सांसो में रच बस जाए।
कुदरत के ये अजब नजारे ,
क्यूं हम समझ न पाए ।
मुफ्त का नीर, महकी समीर,
मानव को रास न आए ।
बरसात के बहते पानी में,
आओ फिर से नाव चलाएं ।
छपाक छपाक की मधुर ध्वनि ,
बचपन में लौट हम जाएं ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मेरा भारत

गणेश दत्त बजाज

चंडीगढ़, भारत

मेरा भारत सबसे सुंदर,
मेरा भारत बने महान ।
जाति धर्म पीछे रह जाएँ,
देश प्रेम का हो गुणगान ।
अपने देश के लिए ही जीना,
बनी रहे बस इसकी शान ।
कर्मों को कुछ ऐसा कर लें,
बढ़े सदा इसका सम्मान ।
गौरव शाली देश हमारा,
बना रहे ये स्वाभिमान ।
इज्ज़त ना कम होने पाये,
मन में लो ऐसा अब ठान ।
देश के सैनिक भारत माँ पर,
तत्पर हैं होने कुर्बान ।
सोच रहे मेरे जीते जी,
क्यों कम होगी देश की आन ।
सदा रहूँ मैं जागरूक सा,
चोकन्ने रहते हों कान ।
सदा वृद्धि को पाती जाए,
इसकी आन बान और शान ।
बुरी नज़र जो डाले देश पर,
उसका मिटा दूँ नामों निशान ।
भारत वर्ष को अखंड रखने,
देश को दे दूँ जीवन दान ॥

भारत की शान

ये सच है कि आज़ाद हो गए हैं, खुशियों से आबाद हो गए हैं ।
विकास से प्रफुल्ल हो गए हैं, मनभावन हालात हो गए हैं ।
संसार में पहचान हो गई है, अब भारत की शान हो गई है ।
पुरातन को हर कोई जानता है, बुद्धिमता को विश्व मानता है ।
अनुसंधान में सह-भागिता है, अन्तरिक्ष को भी देश जाँचता है ।
योग पर हमें आन हो रहा है, संस्कृति पर मान हो रहा है ।
विश्व में आईटी का बोल-बाला, देश के डॉक्टरों का काम निराला ।
प्रबंधन में भारतीयों ने किया उजाला, कई देशों में बनाई माला ।
आओ कुछ काम और कर लें, एक कानून की नींव धर लें ।
एक देश एक न्याय व्यवस्था, एक जैसी पढ़ाई पढ़ लें ।
एक सामाजिक नियम मना लें, एक कर नीति हम बना लें ।
अपने ही देश को सवांरना है, विकारों को हमने बुहारना है ।
नियमों से चले काम यहाँ सारे, ऐसी सोच को उभारना है ।
मान करें राष्ट्र भाषा का, प्रेम से सबको पुकारना है ।
विकास के प्रयास करें सारे, राष्ट्रीय चरित्र को हम सवारें ।
संकल्प करें पूरे शुचिता से, विश्व को परिवार मानना है ।
ठीक लगी बात तो अब बोलो, कहना मेरा सबको मानना है ॥

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

आशीष शर्मा

इंडोनेशिया

ज़िंदगी की दहलीज़ पर

ज़िंदगी की दहलीज़ पर,
लम्हों के सुनहरे दरवाज़े हैं,
हसीन गुदगुदाते ख्वाबों वाली,
रंग-बिरंगे शीशों की खिड़कियाँ हैं,
खुशनुमा यादों के,
रौशन-चमकते-झूलते झूमर हैं,
दुःखद स्मरणों की गर्म हवाओं को,
निगलते मरहम से वो रौशनदान हैं,
ज़िंदगी के आशियाने में,
एक बाग भी है,
नर्म मखमली घास वाला बाग,
महकते फूलों की बहार है,
नई कोंपलों की ताज़गी है,
घने पेड़ों की सादगी है,
बेलों की अठखेली है,
हरे पत्तों का यौवन है,
पके फलों का तजुर्बा है,
जो तपती धूप से आया है,
हर तरफ़ रंग ही रंग हैं,
फिर क्यों कहते हो,
कि जीवन बेरंग है !
जीवन तो रंगों से भरा है,
और तुमने ही भरा है,
सिर्फ़ एक पंखों सा ख़याल,
तुम्हें अर्श पर लाने को काफ़ी है,
अब जो घट रहा है,
यही ईश्वर की सबसे बड़ी नेमत है,
आज मैं हूँ,
बस यही लम्हा काफ़ी है,
जीवन को क्यों करते हो ख़त्म,
इसकी नहीं कोई माफ़ी है,
जीवन में होता नहीं तोल-मोल है
याद रखना सदा जीवन अनमोल है।

ये धरा - वसुंधरा

ये धरा - वसुंधरा,
अपने में समाए है,
परबत, दरया, सहरा, जंगल,झरने,
जाने क्या-क्या ....
ये धरा - वसुंधरा ।

ये ब्रह्मंड, है प्रचंड,
इसमें विचरे ये धरा,
घूमे ही जाए है,
अपनी ही चाल से,
अपने ही वेग से,
बिना कहीं रुके हुए,
बिना कहीं थके हुए,
करती है सूरज की परिक्रमा ।

परबतों की श्रिंखला आसमां को चूमतीं,
पुष्पों से लदी वादियाँ लह-लहा के झूमतीं,
झर-झर चाँदी से बहते झरने,
जीवन-दायक शीतल नदियाँ,
जोशीले महासागर कहीं उफान मारते,
ज्वालामुखी दहकते अंगारे उछालते,
चादर सफ़ेद रंग की बर्फ़ है ओढ़ा रही,
कहीं तपते रेगिस्तान को एक बदली चिढ़ा रही ।
(और कहीं धूप से तपते रेत के सहरा)

नील वर्ण सागर,
हरा वनस्पति,
श्वेत रंग बर्फ़ानी,
रंग भूरा मिट्टी,
सुशोभित इन वर्णों से,
धरा ये पटरानी,
बन के अंगरक्षक,
परिमंडल करता चंद्रमा ।

जननी है सबकी ये धरा-मातेश्वरी वसुंधरा,
इसका हृदय विशाल करूणा-भाव से भरा हुआ,
इसकी रक्षा-इसकी स्वच्छता, कर्तव्य है हर प्राणी का,
इसकी आन-इसकी शान
- बरक़रार रखना
- ये शंखनाद गूँजता,
जो समझे न हम आज मोल इस अमूल्य देन का,
कोसेंगी सोच को हमारी आने वाली पीढ़ियाँ,
हो रक्त-सिंचित भाव ये जगत के हर प्राणी में,
प्रण है हमारा हे धरा !
हर प्रयत्न कर के रखेंगे तेरी ये सुंदरता ।

ये धरा - वसुंधरा,
अपने में समाए है,
परबत, दरया, सहरा, जंगल,झरने,
जाने क्या-क्या ....
ये धरा - वसुंधरा ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

सुभाष भास्कर

चंडीगढ़, भारत

भारत रत्न विनोबा भावे

शताब्दियों में आता है विरला कोई इंसान
साधारण होते हुए भी करे जो कार्य महान
विनायक नरहर भावे का
गागोदा था गांव
माता जिनकी रुक्मणी नरहर पिता का नाम

२३ सितंबर १८९५ को जन्मा वह नादान
नित्य प्रति जो करता था गीता का गुणगान
माता के लिए मराठी में की गीता अनुवाद
बापू की बातों का था जिस पर गहरा प्रभाव
ब्रह्मचर्य जीवन था उसका प्रकृति से था प्यार
मिठ बोला व मेहनती था वह ध्यानतदार

भूदान आंदोलन की इसने की शुरुआत
दान में लेकर लाखों एकड़ दी गरीबों में बांट
भूमिहीनों का इन्होंने किया था उत्थान
अथक प्रयासों से किया था वह कार्य महान
पदयात्रा करते हुए पहुंचे गांव और शहर
महान विभूति परिश्रमी ऐसे थे नरहर
राष्ट्रपिता महात्मा के थे शिष्य परम
नाम विनोबा बापू दिया देखकर उनके कर्म
संत विनोबा भावे थे भारत रत्न
सारी दुनिया करती है
उनको शत-शत नमन

शिक्षक

सुबह में जल्दी उठ जाता
पापा के संग पार्क जाता
जब मैं लौट के आता
ब्रश करता और फिर नहाता
बालों में कंघी करके
ड्रेस डालकर तैयार हो जाता

नाश्ते के टेबल पर आता
मक्खन संग परांठे खाता
मम्मी मेरा टिफिन बनाती
स्कूल बस में बैठा कर आती
घंटी बजती टन टन टन
भाग कर जाते फिर सब हम

प्रार्थना होती और व्यायाम मालिक का होता गुणगान
क्लास में फिर शिक्षक आता प्यार से हमको पाठ पढ़ाता
कहानियों के माध्यम से हमें अच्छी अच्छी बातें
सिखलाता

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

साहिल

दिल्ली, भारत

ग़ज़लें

मेरी कलम से

जबसे आँखों ने देखा है चेहरा तेरा
तबसे दिल पर लगा है पहरा तेरा।

ये दिल फिर से धड़कने लगा है
असर हुआ है बहुत ही गहरा तेरा।

प्रेम की पूर्ण भाषा यदि बन जाओ तुम
मैं फिर बन जाऊंगा ककहरा तेरा।

मैं लोगों से आँखें चुराने लगा हूँ
क्योंकि नाम है इनमें ठहरा तेरा।

मेरी रातों का सौदा करने वाले सुन
मैं तो होना चाहता हूँ बस सवेरा तेरा।

एक फूल ने तितली से पूछा है 'साहिल'
क्या कभी मुझ पर भी होगा बसेरा तेरा।

सुन कर अनसुना कर रहा हूँ
मैं तो एक गुनाह कर रहा हूँ।

सोया हुआ ज़मीर तो कहता हैं
मैं कुछ गलत कहाँ कर रहा हूँ।

सही गलत में जो फ़र्क नहीं जानते
मैं उन लोगों से सलाह कर रहा हूँ।

मुझसे ये कह रही है एक चीख
मैं एक जिंदगी तबाह कर रहा हूँ।

अकेले सिसकता छोड़ किसी को
मैं संबोधित एक सभा कर रहा हूँ।

जिस ना को नहीं सुना 'साहिल'
मैं उसकी सज़ा को हाँ कर रहा हूँ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अन्नू रानी शर्मा

चंडीगढ़, भारत

हार मत स्वीकार करना

इस धरा से उस गगन तक
सप्त-सिंधु के चरण तक
पसरी हैं संभावनाएं
क्षीरसागर के भ्रमण तक
श्वास की हर नर्तकी का
आस से श्रृंगार करना
हार मत स्वीकार करना

तन तो पुतला, तन का क्या है
मन की सुन कर बहकता है
मांस-मज्जा का घड़ा ये
वश है, न स्वाधीनता है
कर्म-जल में इस कलश को
बेधड़क गतिसार करना
हार मत स्वीकार करना
हार मत स्वीकार करना

मत भटकना भूल कर भी
चैन के लालित्य में
तन से, मन से बद्ध रहना
नित्य निज दायित्व में
आत्मबल पर चोट करती
हर शिला पर वार करना
हार मत स्वीकार करना
हार मत स्वीकार करना

ज़िद्दी बनना पड़ता है

कुछ पाने को ज़िद्दी बनना पड़ता है,
कांटों पर भी डटकर चलना पड़ता है।

तारे पाने की ख्वाहिश गर रखते हो,
बादल का आतंक कुचलना पड़ता है।

बिन भुलसे तो सोना नहीं चमक पाता,
भट्टी के आगोश में पलना पड़ता है।

मिटने से इंकार करे जब अंधियारा,
बनकर के अंगार सुलगना पड़ता है।

जब जब झुकने से इंकार करे तूफां,
पर्वत बनकर राह में अड़ना पड़ता है।

नहीं सहारा देती है किस्मत जिनको,
उनको गिरकर स्वयं संभलना पड़ता है।

सबसे कम गम किसके हैं

सबके अपने दर्द हैं यारो
सबके अपने किस्से हैं।
तुम ना ये अंदाज़ लगाओ
सबसे कम ग़म किसके हैं।
ग़म तो सबके हिस्से हैं।

किसी को आता है आंसू से
अपने दर्द को जतलाना
किसी को पीड़ा का पर्वत
पड़ता है मन में दफ्नाना
सब की अपनी नाजुक नज़्में
सब के टूटे मिसरे हैं
तुम ना ये अंदाज़ लगाओ
सबसे कम ग़म किसके हैं

वक्त की लहरों में सब का ही
कुछ खोया, कुछ छूटा है।
कभी न कभी, मन सब का ही
चटका, थक कर टूटा है।
अंधियारे से घिरी राह पर
सबके जीवन भटके हैं।
तुम ना ये अंदाज़ लगाओ
सबसे कम ग़म किसके हैं।

गर हो पाए तो दो पल को
सुन लेना पर पीर कोई।
अगर नहीं मरहम दे पाओ
ज़ख्म न देना चीर कोई।
सबकी आंखें बाढ़ हुई हैं
सब्र-बांध भी चटके हैं।
तुम ना ये अंदाज़ लगाओ
सबसे कम ग़म किसके हैं।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

डायरी के पृष्ठ

डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक
लुधियाना
भारत

आओ लौट चलें....

ढल रही शाम को
देख रहे हो
मैं जानती हूँ
तुम क्या सोच रहे हो
यही कि
शाम का सूरज तो
कल लौट आयेगा सुबह के साथ
किन्तु
उम्र का यह जो दिन ढल गया है
यह फिर कभी नहीं आयेगा
कभी नहीं आयेगा
कहाँ खो गये हो
क्यूँ संजीदा हो गये हो
अरे !
यह सब छोड़ो न
यह ख़ामोशी तोड़ो न
आओ लौट चलें....
बेटा भी ट्यूशन से आ गया होगा
काम वाली गुडिया को भी
काम निपटा कर अपने घर जाना है
मुझे भी अपनी नयी किताब का
प्रीफेज़ लिखना है
तुम भी तो आफ़िस से उठा लाये हो
अपनी काम वाली फ़ाइलें
तुम्हें भी तो अपना काम निपटाना है
आओ ! लौट चलें....
सूरज को
अलविदा' कह कर'
चलो न
चाँदनी खिलने का इन्तज़ार करें....।

जब इस नव वर्ष की
डायरी लिखना
तो पहले पृष्ठ पर
सिर्फ़
'मुहब्बत'
लिख कर छोड़ देना
कुछ पृष्ठ पर अपने ख़्वाब,
अपनी ख़्वाहिशें लिखना

बीच के पृष्ठ को
हृदयस्पर्शी
कविताओं के लिए रखना
भावुकता के लिए रखना

कुछ पृष्ठ
सिर्फ़ अपने लिए रखना
उन पे जो लिखना
कभी प्यार के रंग से लिखना
कभी आँसूओं के पानी से लिखना
कभी स्वाति की बूंदों से लिखना

डायरी के बिल्कुल बीच
रख देना मोगरे के फूल की पाँखुरी
स्मृतियों के मोती

कुछ पृष्ठ''..
समय के लिए छोड़ देना
जीवन के लिए छोड़ देना
उन में लिखने देना
यथार्थ में डूबे हुए शब्द
किसी पृष्ठ पर
अतीत का कोई दुःख नहीं लिखना

कोई अपनी हार की
कहानी नहीं लिखना
प्रतिस्पर्धा का
एक भी शब्द नहीं लिखना

अगर
लिखनी भी पड़ जाये
तो
उदासी की
केवल एक पंक्ति लिखना

उपलब्धियों के लिए
सिर्फ़
एक ही पृष्ठ रखना
एक पृष्ठ पर
क्या खोया - क्या पाया
लिखना
एक पृष्ठ पर
स्वंय से किया हुआ
प्रण लिखना
किसी पृष्ठ पर
बोझल आँखों से
कोई आँसू मत गिराना

अनुभवों के लिए
बहुत सारे

आख़िर में
एक पृष्ठ
छोड़ देना
कायनात के लिए''।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

कब्र के फूल

(लघुकथा)

राशिद हुसैन

मुरादाबाद, भारत

ईद की चांद रात थी बाज़ार गुलज़ार थे। सभी लोग ईद मनाने के लिए कपड़े, जूते, सजावटी सामान और खाने पीने की चीजे खरीदने में मसरूफ़ थे। चौदह साल के अनवर के दोस्त भी उसे अपने साथ बाजार ले गए सब ने खूब खरीदारी की लौटते वक्त अनवर ने कुछ ताज़ा गुलाब के फूल खरीदे साथियों ने आश्चर्य चकित होते हुए सवाल किया तुमने ईद के लिए कोई कपड़ा जूते नहीं लिए ! सिर्फ ये फूल ? अनवर ने जवाब दिया तुम लोग तो सुबह उठकर नए कपड़े पहन कर अपने अपने अम्मी अब्बू से गले मिलकर ईद मना लोगे लेकिन मुझे तो अपने अम्मी अब्बू से मिलने कब्रिस्तान जाना होगा ये फूल उन्ही की कब्र पर चढ़ाने के लिए हैं। अनवर की बात सुनकर सब खामोश हो गए और अपने अपने घर को वापस लौट आए।

हज़ार ग़म हैं मगर मुस्कुराए जाते हैं।
बड़े सलीक़े से आंसू छिपाए जाते हैं॥

लहू लहू है हमारा बदन वफ़ा के लिए।
पर उसके बाद भी हम आज़माए जाते हैं॥

वफ़ा की राह पे चलना बड़ा ही मुश्किल है।
बड़े बड़ो के क़दम डगमगाए जाते हैं॥

मोहब्बतों की ये महफ़िल है ना समझ सुनले।
यहां पे अक्ल नहीं दिल लगाए जाते हैं॥

ज़ुबान फूल हो किरदार आईने जैसा।
कब ऐसे लोग ज़माने में पाए जाते हैं॥

ये तजुर्बा भी हमे ज़िंदगी ने बख्शा है।
दुआओं से ही मुकद्दर सजाए जाते हैं॥

है ज़िंदगी में मेरी उलझनें बहुत राशिद।
वो दर बता दे जहां ग़म मिटाए जाते हैं॥

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

नाम भर की

(लघुकथा)

वीणा विज'उदित'

जालंधर, भारत

ढलती उम्र की जाती हुई बहार जो भी कष्ट देती है उसे सहना ही जीवन क्रम बन जाता है। कुछ दिनों से एहसास हो रहा था कि अब यह जिंदगी चंद दिनों की मेहमान ही रह गई है इस जग में। सो, बैठे-बैठे एक लिस्ट बना रही थी कि कौन-कौन से गहने, कपड़े, सामान किस बहू और बेटी को दिए जाएंगे मेरे पश्चात!

तभी पैरों की जलन बढ़ गई और टांग की व कमर की दर्द तड़पाए जा रही थी। पंद्रह वर्ष की "सलोनी" मेरी नौकरानी-- बेचारी मुझे दोनों हाथों से दाब रही थी। जब भी पैरों में जलन होती तो टब में ठंडा पानी लाकर मेरे पैरों को पानी में सहलाती और तौलिए से पोंछती थी। शायद ईश्वर ने उसे मेरे शुभ कर्मों के अनुरूप मेरे पास भेज दिया था। मैंने अपनी सास की उनके बुढ़ापे में बहुत सेवा की थी। वह आशीषें देती थकती नहीं थीं। मुझे उसका फल मिल रहा था। मेरे अर्जित सुकर्म ही थे, जो अब मेरे बुढ़ापे में यह आ गई थी। यह बच्ची पूरे मन से मेरी सेवा कर रही थी।

मैंने झट से अपनी लिस्ट में सलोनी का नाम जोड़ दिया और मन ही मन उसके लिए कितना कुछ करने की सोच गई। यही अंत में मेरी सेवा कर रही है। मेरी औलादें जो मुझे बहुत प्रिय हैं--- वो तो नाम भर की हैं अब!

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

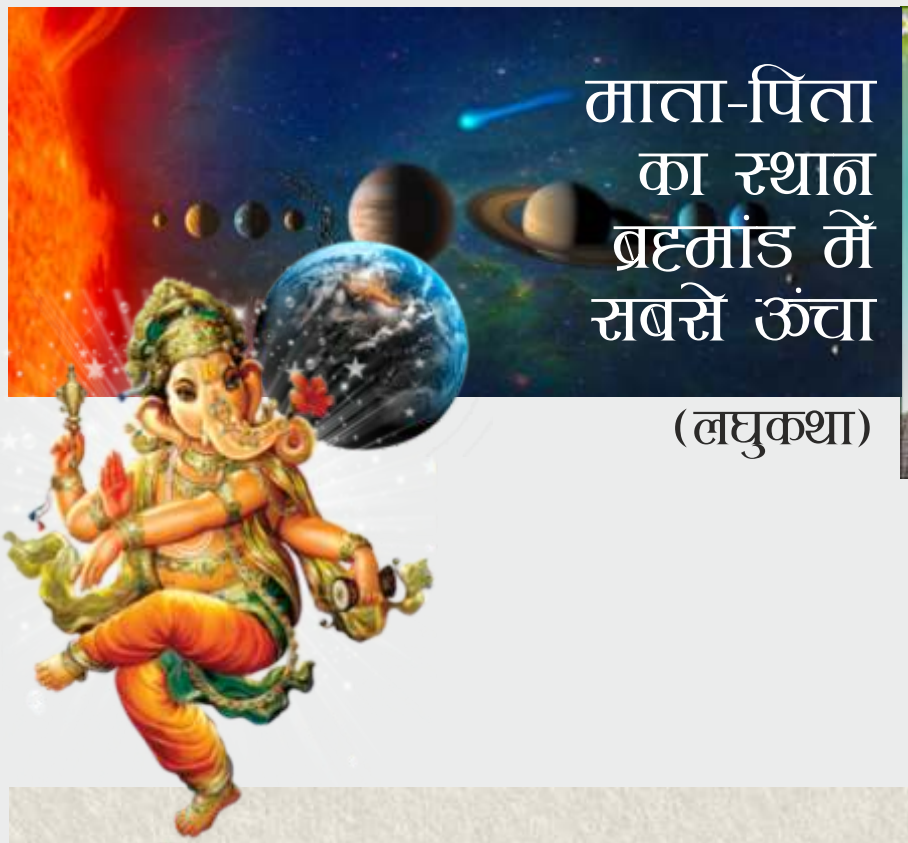

माता-पिता का स्थान ब्रह्मांड में सबसे ऊंचा

(लघुकथा)

बाल कृष्ण गुप्ता 'सागर'

पंचकूला, भारत

एक समय की बात है सभी देवता यह सोचने लगे कि हम में से सर्वश्रेष्ठ कौन है और किसकी पूजा सबसे पहले होनी चाहिए । उन्होंने इस विषय में नारद मुनि जी से बात किया। नारद जी ने उन्हें कहा कि आप भगवान शंकर जी के पास चले जाइए और उनसे इस समस्या के बारे में पूछिए । वही आपकी समस्या का समाधान कर सकते हैं । सभी देवता इकट्ठे होकर शंकर जी के पास चले गए ।

भगवान शंकर ने आदेश दिया कि आप सभी अपनी अपनी सवारी पर सवार होकर पूरे ब्रह्मांड का चक्कर लगाकर हमारे पास आ जाए जो सबसे पहले पहुंच जाएगा उसे सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया जाएगा ।

प्रतियोगिता प्रारंभ होते ही सभी अपनी-अपनी सवारी से ब्रह्मांड का चक्कर लगाने के लिए चल पड़े । गणेश जी की तो मूषक सवारी थी भारी भरकम शरीर था । गणेश जी ने ब्रह्मांड का चक्कर लगाने की बजाय माता-पिता को ही पूर्ण ब्रह्मांड मान लिया और उनकी सात प्रदक्षिणा कर ली और हाथ जोड़कर बैठ गये। यह दृश्य देखकर शिव जी का हृदय गदगद हो गया। उसी समय आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। उनका बुद्धि कौतुक देख कर ब्रह्मा जी ने भी प्रसन्नता व्यक्त की ।

ब्रह्मांड का चक्कर लगाकर कार्तिकेय सबसे पहले पहुंचे । उन्होंने देखा कि गणेशजी तो वहां पहले से ही विद्यमान हैं । बहुत आश्चर्यचकित थे। सोचने लगे कि मूषक की सवारी होने से वे कैसे चक्कर लगा कर पहले आ गये ।

शिव भगवान ने सभी की शंका का समाधान करते हुए कहा कि गणेश ने ब्रह्मांड का चक्कर लगाने की बजाय अपने माता-पिता की परिक्रमा की है। माता-पिता में सम्पूर्ण ब्रह्मांड समाया होता है। शिवजी की बात सुनकर सभी देवता उनके निर्णय से सहमत हो गये । तभी से गणेश जी को प्रथम पूज्यनीय देवता माना गया है। यह भी माना गया है कि वे विघ्न विनाशक हैं ।

शंकर जी का मानवता को बहुत सुंदर संदेश है कि सकल अंड-ब्रह्मांड में माता-पिता से बड़ा कुछ नहीं होता। उनकी सेवा से ही सभी ऋद्धि सिद्धि की प्राप्ति हो सकती है । मनुष्य को कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं है अगर वह तन-मन धन से उनकी सेवा करता है । भोलेनाथ की जय हो । आप सभी पर उनका आशीर्वाद बना रहे यही मैं अपने ईष्ट भोले बाबा से आपके लिए मांगता हूं ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

राजेंद्र धवन

चंडीगढ़, भारत

फिर तन्हाई जीत जाएगी

कोई जादू है तुम्हारे पास
तो बोल दो

बंद दिल की चाबी है तुम्हारे पास
तो खोल दो

दिल किसी और के बारे सोचता ही नहीं
ऐसा क्या है तुम्हारे पास

शब्द शब्द में वह जादू रचता गया
और बेसुध करता गया

तुम्हारी शिकायत कि हम याद नहीं करते
भूले कहां थे जो याद करते

जादूगर यूं ख्वाबों में न आया कर
आ जाए तो फिर जाया न कर

तुम्हारे इंतज़ार में एक और जिंदगी बीत जाएगी
न आए तो फिर तन्हाई जीत जाएगी।

इश्क में कहां दस्तूर होता है

आप यूं न टहला कीजिए
मेरे दिल के खाली आंगन में
सीना छलनी छलनी हो जाएगा
आपका तो कुछ भी न जाएगा ।

जिंदगी में यूं कदम रखिए
फूल महकें रंग बिखरें
दर्द मिटें मुस्कान छलके
लम्हा तुम बन जाना वक्त मैं बन जाऊं ।

सांसें शेष अब कितनी भी हों
हाथ तुम थाम लेना साथ मैं
इश्क में कहां कोई दस्तूर होता है
यार कैसा भी हो कबूल होता है ।

मच्छर और इंसान

कर्मवीर मित्तल

दिल्ली, भारत

गर्मियों का मौसम आते ही
मच्छरों का हुआ आगमन
मन हुआ कुछ उद्वेलित
अब रण होगा घमासन
चारों और भिनभिनायेंगें मच्छर
घर बाहर खेत खलिहानों में
होगा मच्छरों का ही राज
नाक कान और पैरों पर होगा आक्रमण
मच्छर राजा दिखने में तो लगते हो
बहुत छोटे और मासूम
पर नही हो, किसी से भी कम।

करते हो तुम प्रहार बेशुमार
मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया है
सभी तुम्हारी ही देन
नहीं बुलाता तुम्हें, कोई अपने घर
फिर क्यों बिना बुलाये करते हो ताका झांकी
खून लगा मानव का तुम्हारे मुख
गंदगी से उपजे हो
क्यों आते हो हमारे संमुख...
देते रोगों का आगाज ।

मच्छर कुछ सकुचाते हुए बोला
क्यों अपने अवगुण छिपाते हो और
मेरे अवगुणों पर प्रत्यंचा चढ़ाते हो
मैं तुच्छ पंतगा,
नही है उचित अनुचित का भान
पर तुम इंसान होकर भी क्यों भूले इंसानियत को
सदियों से चूस रहो हो खून
निर्बल, शोषित और उपेक्षित जनों का

फिर भी दंभ भरते हो इंसानियत का ।
न जाने, धरा कितनी बार लाल हुई
जाति, धर्म और राजनीति के दंगों से
तुम हमेशा धृतराष्ट्र बने रहे और
तुम्हारी इंसानियत
आंखों पर बांध पट्टी गांधारी
दोनों ने इंसानों के खून से खेला
फिर मैं ही अकेला दोषी कैसे...
क्या निर्बल, असमर्थ होना ही मेरा दोष है.....
मच्छर हूं तो क्या मसल दोगे..
जहरीली दवाई छिड़क कर मार दोगे
तुम्हारे खिलाफ रपट लिखाऊंगा
हत्या का मुकदमा चलाऊंगा
जीना मेरा मौलिक अधिकार है।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

सत्य मोहन-सत्यम्
ग्रेटर नोएडा, भारत

राम बसे हैं रोम-रोम में,
धरती और अनंत व्योम में !
जीवन के हर क्षण में राम,
इस जग के कण-कण में राम !

राम-चरित को जीवन में हम, गहराई तक छान लें !
जब भी मिलें किसी से भी हम, राम लला का नाम लें !

पीड़ा में अरे-राम निकलता,
दुःख में हम कहते हे-राम !
हाय-राम लज्जावश कहते,
अभिवादन में राम-राम !

जिसे अयोध्या दूर लगे वो, मन में इतना ठान लें !
जब भी मिलें किसी से भी हम, राम लला का नाम लें !

शपथ में कहते राम-दुहाई ,
जिसका कोई न उसके राम !
अनिश्चय में राम-भरोसे ,
निर्बल के हरदम बलराम !

विश्वगुरु हो भारत अपना ,अब तो सब ये मान लें !
जब भी मिलें किसी से भी हम, राम लला का नाम लें !

सुशासन को राम- राज्य और ,
जोश में बोलें जय श्री-राम !
अचूकता को रामबाण और ,
अपनेपन में मेरे-राम !

सभी सनातनी राम-नाम पर, अपना सीना तान लें !
जब भी मिलें किसी से भी हम, राम लला का नाम लें !

फिर से मैं बच्चा बन जाऊँ

कभी-कभी मन यूँ करता है,
फिर से मैं बच्चा बन जाऊँ !
देर तलक बिस्तर में लेटूँ,
जागूँ पर, फिर से सो जाऊँ !
कभी-कभी.....
माँ जो मुझे गोद लेती थी,
फिर ईश्वर से उसे माँगाऊँ !
पापा का भी हाथ हो सर पे,
कुछ ऐसा करतब करवाऊँ !
कभी-कभी.....
अभी, दर्द-ग़म.. सह लेता हूँ,
सारे खुलकर मैं कह पाऊँ !
थोड़ा सा भी दर्द मिले तो,
बड़ी जोर से मैं चिल्लाऊँ !
कभी-कभी.....
बिन ग़लती के सज़ा मिले तो,
शीश झुकाकर सज़ा न पाऊँ !
हठ करके अड़ जाऊँ वहीं पर,
झूठी सज़ा माफ़ करवाऊँ !
कभी-कभी.....
कितने ही दुःख सह जाता हूँ,
कभी न मन का दुःख कह पाऊँ!
काश ! हृदय जब घायल हो तो
फूट-फूट कर अश्रु बहाऊँ !
कभी-कभी.....
कभी हँसू अट्टाहस भरकर ,
खुली हवा में झूमूं-गाऊँ!
ज़िम्मेदारी की गठरी को ,
दो-पल कहीं और रख आऊँ !
कभी-कभी.....

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

(लघुकथा)

डॉ० मुक्ता

गुरूग्राम, भारत

आज शालिनी अपनों के चक्रव्यूह में फंसी, स्वयं को असहाय दशा में अनुभव कर रही थी । पिता-पुत्र दोनों उसके लेखन की भरपूर आलोचना कर रहे थे । 'तुम सदैव नकारात्मक ही क्यों लिखती हो ? क्या सोचते होंगे लोग कि हमने तुम्हें बहुत परेशान कर रखा है ।'

-ऐसी तो कोई बात नहीं । मुझे यहां कोई दुःख नहीं है। अच्छा-खासा आलीशान घर है- आधुनिक सुख-सुविधाओं से लबरेज़ और प्यारी-सी बिटिया, जिसका चंद लम्हों का साथ हृदय को सुकून दे जाता है।

-जहां तक लेखन का संबंध है, मैं महिला जगत् के दुःख-दर्द को बखान करती हूं। नब्बे प्रतिशत महिलाएं इस त्रासदी को झेल रही हैं । जब समाज में यह सब घटित हो रहा है, तो लेखक इसके प्रभाव से अछूता कैसे रह सकता है ? दूसरों के दुःख-दर्द को अपना समझ, उसकी पीड़ा को अनुभव कर बखान करना तथा आमजन को कटु यथार्थ से वाक़िफ़ कराना ही लेखक का दायित्व होता है । सो ! मैं अपने दायित्व का वहन बखूबी कर रही हूं। तुम दोनों के अतिरिक्त कोई मुझ पर कटाक्ष नहीं करता। सब मेरी लेखनी को नमन करते व खूब सराहते हैं। मुझे इससे फर्क़ नहीं पड़ता कि तुम लोग मेरे बारे में क्या सोचते हो या परिवारजनों की क्या राय है ?

-मैं सत्य का बखान करती हूं। सत्य हमेशा कटु होता है। परंतु वह देर से ही सही, लाख पर्दों के पीछे से भी उजागर हो जाता है।

-तुम रिश्तों में पड़ी दरारों; एक छत के नीचे रहते हुए अजनबीपन के एहसास और एकांत की त्रासदी झेलते बच्चों के माध्यम से क्या उजागर करना चाहती हो ? क्या हमारे घर का ऐसा नामाकूल वातावरण है ?

-यह तो घर-घर की कहानी है। इसे व्यक्तिगत समझ आक्षेप करना तुम्हारी मूर्खता है और समाज के कटु यथार्थ व विसंगतियों को उजागर करना हर साहित्यकार का दायित्व है, जिसका मैं बखूबी वहन कर रही हूं।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

कुदरत

डॉ० जवाहर धीर
फगवाड़ा, भारत

सुन्दर, सलोनी और सजीली कुदरत,
कैसे रंग दिखलाती है ।
कहीं मैदान में बहती नदिया,
कहीं पर्वत में इठलाती है ॥
बर्फ से ढके पहाड़ कहीं हैं,
और कहीं फैली है रेत ही रेत ।
सर्दी पड़ती कहीं भयंकर और
कहीं पे धूप बहुत सताती है ।
खेतों में कहीं मोर नाचते
और करते सबका मन प्रसन्न ।
कहीं नागों का पहरा है,
कहीं कोयल कू-कू गाती है ॥
समझ न पाता मेरा मनवा,
कुदरत के खेल न्यारों को ।
उसी मिट्टी में हैं कटि उगते,
'धीर' उसी में फूल खिलाती है ॥

मिज़ाज मौसम का

आदमी की तरह अब आजकल,
बदल रहा मिज़ाज मौसम का ।
बर्फ-बारिश गुम हुए,
नहीं रहा अब एतबार मौसम का ॥
तय होती थी पहले तो तारीख़ भी बारिश
की दोस्तो ।
अब नज़रें आसमां ताकतीं,
समझ न आए हिसाब मौसम का ॥
मौसम की तरह बदल जाता है आदमी,
सुना करते थे ।
आदमी ही जब बेबफ़ा हुआ,
क्यों करें एहतराज मौसम का ॥
लोग अब हैं तरसते कि बने
कुछ ऐसा सिलसिला 'धीर' ।
बदले फितरत आदमी की,
हो आगाज़ नये मौसम का ॥

आओ प्रभात आओ मेरे घर

गीता मंजरी मिश्र (सतपथी)

दिल्ली, भारत

आओ प्रभात आओ मेरे घर ,
तारों की चादर हटा
सद्यस्नात तरुण सा
स्वच्छ स्फटिक,
ज्योति पत्रि कर धर,
आओ-आओ प्रभात
आओ मेरे घर ।
पल्लवित नव किसलय दल
प्रस्फुटित कुसुम इधर
सरोजिनी पर पड़ा शिशिर
गहन निशीथ चीर,
आओ-आओ प्रभात
आओ मेरे घर ।
नीड़ छोड़ने तैयार खग
नीरव नीड़ में दिखा चहल
सुन विहग का मंगल स्वर
अगणित चारु दृश्य चहुँ ओर ,
आओ-आओ प्रभात
आओ मेरे घर ।
सिंदूरी रथ पर हो सवार
पहन प्रस्फुटित कुसुम हार

दिवाकर के हाथ धर
नव प्रभात, जड़ को चेतन कर !
आओ-आओ प्रभात
आओ मेरे घर ।
मलय समीर लेकर
खुले कपाट से होकर
आओ प्रभात मेरे अंतर
आओ प्रभात मेरे अंदर,
आओ-आओ प्रभात
आओ मेरे घर ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

पेड़ लगाओ

(लघुकथा)

विजय कुमार

अम्बाला छावनी, भारत

राघव जी शहर के प्रतिष्ठित व्यापारी थे और सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहते थे। शहर में कई सामाजिक संस्थाओं के वह पदाधिकारी भी थे। ऐसी ही एक संस्था ने 'पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ' के अभियान के तहत पेड़ लगाने का प्रस्ताव पारित किया। राघव जी ने अपने सहयोगियों के साथ सड़क के किनारे-किनारे वृक्ष लगाने के कार्य का जिम्मा संभाल लिया और काम में जी जान से जुट गए।

उनके दोस्त श्रवण ने यूं ही सवाल किया, "राघव यार, मुझे एक बात समझ नहीं आई कि दूसरे सभी लोग कालोनियों और पार्कों में पेड़ लगाने में लगे हैं, और तुम सड़कों के किनारे पेड़ लगाने में जुटे हो, जबकि सड़कों के किनारे पेड़ लगाना तो सरकार का काम है।"

"यार पेड़ लगाने का काम तो सभी का साझा होता है, सभी को लगाने चाहिए। इसमें सभी को लाभ मिलता है। इसमें क्या सोचना कि सरकार की तरफ से ही लगने चाहिए। सरकार और जनता अलग-अलग थोड़े ही हैं। दोनों को मिलजुल कर कार्य करना चाहिए, तभी तो देश का भविष्य उज्जवल होगा और हमारी आने वाली पीढ़ियों का भी," राघव जी ने कहा, "वैसे एक निजी कारण भी है सड़क के किनारे-किनारे पेड़ लगाने का।"

"वह क्या ?" उनका दोस्त बोला।

"एक बार मैं सैर से वापस आ रहा था, तो मैंने एक व्यक्ति को कार चलाते हुए गलत दिशा से यानी मेरे सामने से लहराता हुआ आते देखा। उसे देखते ही मैं समझ गया कि उसने खूब शराब पी रखी है। उसने कार मेरे ऊपर चढ़ा ही देनी थी यदि मैं तुरंत छलांग लगाकर एक पेड़ की ओट में न हो गया होता। कार एकदम से उस पेड़ से टकराई और रुक गई। उस दिन पेड़ की वजह से ही मेरी जान बच गई थी वरना...।"

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

आशिमा राज वार्ष्णेय

बैंगलोर, भारत

भगवान का रूप

(लघुकथा)

मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे हुए बच्चों ने संगीता के हाथ में मिठाई का डिब्बा देख कर उसे घेर लिया। बच्चों को लड्डू बांटते हुए देख कर पुजारी जी बोल पड़े "लड्डू गोपाल लड्डू खा रहे हैं।"

घर से निकलते समय का वक्त संगीता की आंखों के सामने तैर गया "कहां जा रही हो चाची" सुंदर साड़ी पहने हाथ में थाल लेकर जाते हुए देख बाल सुलभ जिज्ञासा से सोनू पूछ बैठा था।

"कितनी बार कहा है जाते समय मत टोका कर। मनहूस कहीं का! अपने मां-बाप को खा गया अब हमारी जान को पड़ गया है। जन्माष्टमी है, प्रसाद लेकर मंदिर जा रही हूं। सारे बर्तन धोकर रख देना और सफाई भी कर देना।" आंखों से ढुलकी हुई बूंदें पोंछ कर सोनू अंदर चला गया था।

संगीता को बहुत पछतावा हो रहा था। यहां बालकृष्ण की पूजा कर रही है और घर पर !!!

पुजारी जी की बात हथौड़े की तरह महसूस हो रही थी "बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं।"

क्षितिज के ललाट पर

क्षितिज के ललाट पर
देदीप्यमान दिनकर
प्रतीत होता है
तुम्हारे भाल पर दमकते कुमकुम सा!!
पुरवाई के झोंकों की सरसराहट
एहसास कराती है
तुम्हारी बिखरी लहराती अलकों की!!
सिंदूरी साँझ लगती है
मानो तुमने अपना आँचल फैला दिया हो!!!
रजनीगंधा की महक
याद दिलाती है
तुम्हारी देह से उठती मादक गंध का!!!
बस यूं ही
तुम्हारी कमी को पूरा करने का
प्रकृति करती है प्रयास!!
और मुझे देती है वजह
बेमानी से जीवन को जीने के लिए
और धीरे से कानों में कहती है
तुम यहीं हो !
यहीं कहीं हो!!!

रोएगा मन

बाबुल तेरा अँगना छोड़,
कल ससुराल चली जाऊंगी।
जाने फिर कब मिल सकूंगी,
सोच हर पल रोएगा मन।

भैया के संग हाथापाई,
आंख मिचौली सखियों साथ।
निश्चल नेह, स्नेहिल स्पर्श,
याद कर कितना रोएगा मन।

पापा से सब जिद मनवाना,
मां का लाड़, मीठी मनुहार।
भाभी के संग गप्पे लड़ाना,
सबसे बिछड़ कर रोएगा मन।

चाय की चुस्की , फिल्मों पर चर्चा
दिन भर मस्ती हंसी ठिठोली।
गोलगप्पों की होड़ लगाना
जब तरसूंगी रोएगा मन।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

सुख की परिभाषा

निर्लेप होरा

दिल्ली, भारत

समय की चक्की चली
लमहों के दाने पिसे
दिन, हफ्ते, महीने
यूँ ही कई वर्ष बीते
जीवन में कभी धूप
कभी शाम देखी
शांति खोजी, प्रेम तलाशा
सन्तों से पूछी सुख की परिभाषा
सन्तों ने उत्तर समझाया
सुख का यूँ अर्थ बतलाया
किसी को मिले सुख धन में
किसी को राम धुन में
किसी को मिले वन-उपवन में
किसी को मिले प्यार के पल में
किसी को मिले कलियों में
किसी को प्रीतम गलियों में
किसी को मिले पर्वत चोटी पर
किसी को मिले समुद्री सतह पर
किसी को मिले नदिया धारा पर
किसी को पायल की छनक में
किसी को प्याले की खनक में

किसी को मिले संगीत सुरों में
किसी को मिले अपने चित्रों में
किसी को मिले सोने की चमक में
किसी को मिले हीरों की दमक में
किसी को मिले पद प्रतिष्ठा पा कर
किसी को राजनीति चला कर
किसी को मिले किसी को रुलाकर
किसी को मिले कुछ मिटाकर
किसी को मिले सता कर
ऐसा सुख क्यों पाएं
जो अल्प होता है
पाएं ऐसा सुख जो
अमर होता है
करें सेवा और दूसरों से प्यार
रहें बलिदान को सदा तैयार
इसी में छिपा है सच्चा सुख
भूल जाएंगे अपने दुःख
हम फूलों जैसे मुस्काये
चारों ओर सुगन्ध फैलाएं
हर जीवन सुखमय बना दें
प्रेम, शांति का उजियारा कर दें ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मेरा मैं

शिल्पा गुप्ता

दिल्ली, भारत

आजकल खोज रही हूँ मेरा मैं
पर मिलता नहीं कहीं मेरा मैं
खो गया है जाने कहाँ मेरा मैं
दुनियादारी से था बेखबर मेरा मैं ।

अल्हड़, बेबाक, मासूम मेरा मैं
बादलों ओअर सपनें बुनता मेरा मैं
सवालों की बरसात करता मेरा मैं
खो गया है जानें कहाँ मेरा मैं ।

ढूंढा हर गली कूचे नुक्कड़ मेरा मैं
पाया पर अपने ही अन्दर मेरा मैं
रवायतों की जंजीर में जकड़ा मेरा मैं
माया मोह के जाल में उलझा मेरा मैं ।

डरा सहमा कंपकंपाता हुआ मेरा मैं
चाहतों के परिंदे दफ्न करता मेरा मैं
प्यादे से भी मात खाता मेरा मैं
मझधार में कोइ तिनका ढूंढता मेरा मैं ।

मंजिल पर किनारा तलाशता मेरा मैं
रोज़ मरता फिर जी उठता मेरा मैं
पाकर भी जो ना मिला मेरा मैं
बाकी कुछ सांस थी या सिर्फ जनाज़ा मेरा मैं ।

सबके हिस्से आया आधा-आधा मेरा मैं
बस मैंने ही जिसे ना पाया मेरा मैं
आज कल खोज रही हूँ मेरा मैं
पर मिलता नहीं कहीं मेरा मैं ।
खो गया है जाने कहाँ मेरा मैं ॥

पहचान

कभी आईने पर पड़ते अक्स में,
कभी साथ-साथ चलती परछाई में ।
कभी दरवाज़े पर लटकती तख्ती में,
तो कभी दीवार से निहारती
खुशमिज़ाज़ तस्वीर में ।
कभी रसोई के चूल्हे चौके में,
कभी दफ़्तर के दास्तावेज़ों में ।
आज खामोशी से दर्द सहते हुए,
कल शायद बदलाव के चिराग जलाते हुए ।
कुमकुम, मेहंदी, पाजेब, बिछिया से,
स्टेरिंग को थाम एक्सेलेटर को दबाते हुए ।
बूझती ही रहती हूँ अपनी पहचान मैं,
खुद से चंद सवाल करते हुए ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

रश्मी शर्मा

मोहाली, भारत

कुछ ग़ज़लें कागज पर से

मैंने जब इक आंख बनाई काग़ज़ पर
उस ने आंख में नहर बहाई काग़ज़ पर

उसने धीमा सांस लिया खुशबू बोला
मैंने जब बगिया महकाई काग़ज़ पर

दिल का हाल लिखा चि□ी में पढ़ लेना
दिल पर एक लकीर लगाई काग़ज़ पर

आ मैं तुझ को सैर करा दूं दुनिया की
देखो मैंने रेल चलाई काग़ज़ पर

उसने होंठ की लाली पोंछी काग़ज़ से
मैंने अपनी शक्ल बनाई काग़ज़ पर

पहलू में आ बैठ करूँ तस्वीर तमाम
देख ज़रा अपनी तन्हाई काग़ज़ पर

उसने बात ग़ज़ल की छेड़ी जब मुझसे
पागल रश्मी क्या लिख लाई काग़ज़ पर

मैं बहुत सोचने लगी हूँ ना
ये भी तो सोच ही रही हूँ ना

आ ही जायेंगे आदमी के हुनर
मैं अभी शहर में नई हूँ ना

छू के देखो मुझे बताओ फिर
मैं यहाँ से चली गई हूँ ना

कौन सी राह थी नही मालूम
तेरे क़दमों पे ही चली हूँ ना

मैं तराशूँ तुझे जो ग़ज़लों में
खुद तराशी सदा गई हूँ ना

उम्र भर जिसको रास्ता न मिले
उस मुसाफ़िर की बेकली हूँ ना

बाद मुद्दत के तुझ को देखूंगी
इक इसी आस पे टिकी हूँ ना

तू जो आये तो जां में जां आये
जां तेरे साथ ही गई हूँ

रश्मी मत ढूंढ दोष दुनिया के
देख इतना के मैं भली हूँ ना

खुद से खुद की गुफ़्तगू जब कभी चलने लगी
दिल के गोशे में कोई .. शम्मा सी जलने लगी

क़ीमतें जब से बढ़ीं .. होशियारी देखिये
हाथ आई मछली मैं .. जल में ही तलने लगी

मुझ से मेरी ज़ात का .. जो हलफ़नामा लिया
खुद मगर दुनिया नये .. रंग में ढलने लगी

सांस मेरे जिस्म में तूने ऐसे फूंक दी
बांसुरी तेरी बनूँ आरज़ू पलने लगी

मैं पशेमाँ सी खड़ी .. हसरतों के दरमियाँ
और तेरी इक कमी .. दिल को फिर खलने लगी

क्यों करूँ अफ़सोस मैं जा रही इस जान का
ख़ाक से पैदा हुई „ख़ाक में ढलने लगी

रात थी काली बहुत , ग़म के साए साथ थे
नाम तेरा ले लिया बेकसी टलने लगी

क्यों हुआ ख़ामोश तू ऐ खुदा-ए-पाक अब
रश्मी को चुप्पी तेरी अब बहुत खलने लगी

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अपनी तरफ

डॉ० प्रज्ञा शारदा

चंडीगढ़, भारत

ज़रूरी नहीं कि खूबियाँ ही
आकर्षित करती हैं हरदम,
कभी-कभार कमियाँ भी
खींचती हैं अपनी तरफ।

भरोसा और हक़ मिले
इश्क़ में ज़रूरी तो नहीं,
कभी-कभी बेवफाई भी
खींचती है अपनी तरफ।

बात मुझसे ही करो
ये ज़रूरी तो नहीं,
तेरा हँसना दूसरे संग
खींचता है अपनी तरफ।

तारीफ़ वो करती थी मेरी
शायरी की हर दफ़ा,
हर दफ़ा अब उसका खीजना
खींचता है अपनी तरफ।

ख़ताओं से जिसकी मैंने
निभाया था रिश्ता सदा,
खतावार कहने की अदा
खींचती है अपनी तरफ।

बेवफाओं की महफ़िल में
तुम चमकती हो सदा,
तुम्हारा यूँ नज़रें चुराना
खींचता है अपनी तरफ।

सब रिश्तों को खा गई नफरत

ना जाने ये कहाँ से आई
सभी घरों में झगड़े लाई
मिलजुल कर रहते थे सब
दिलों में क्यों दीवार बनाई
मिटी नहीं ये दिलों में अब तक
सब रिश्तों को खा गई नफरत।

मंदिर, मस्जिद नहीं एक अब
अल्लाह, ईश्वर नहीं एक अब
दिल के अंदर वास नहीं अब
मन में कोई आस नहीं अब
बहुत भगाया इसको मैंने
फिर भी अंदर आ गई नफरत।

प्यार में मीठा शहद भरा था
यारों में दिल धड़क रहा था
सब की सुख समृद्धि की
मैंने दुआ ही मांगी थी
नमक हलाली की न किसी ने
नमक हराम बना गई नफरत।

मत कर बंदे उम्र को ज़ाया
किसी से नफरत करने में
नफरत ने घर बार हैं तोड़े
घर बाहर और नाते तोड़े
प्यार करो और दिलों को जोड़ो
दिल से बाहर निकालो नफरत।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

संतोष गर्ग "तोष"
पंचकूला, भारत

तन की नज़दीकी और दूरी

अर्ज़

मेरे मरने के बाद
अच्छा कहोगे
क्या फायदा
मेरे नाम
महल बनवा दोगे
क्या फायदा ।
छोटी सी
अर्ज़ है मेरे पिया !
अगर मानो तो
जीते जी,
झोपड़ी जैसा घर बनवा दो
जिसमें सुख चैन से,
भोजन पकाकर
तुम्हें ऐसे खिला सकूँ
जैसे कोई विरहन
सदियों बिछड़े
प्रेमी को खिलाती है....।

तन की नज़दीकी और दूरी जितनी आसां होती है ।
मन में बसाना मन से हटाना उतना मुश्किल होता है ॥

तन को नोच-खरोच के ज़ख्मी करना मुश्किल काम नहीं ।
लेकिन मन का इक कोना भी छूना मुश्किल होता है ॥

तन को गिराया जा सकता है पर्वत पर से खाई में ।
मन का तो कुछ पल भी उठना गिरना मुश्किल होता है ॥

मखमल की हो या फूलों की सेज तो तन की खातिर है ।
मन हो मगन तो काँटों को भी चुभना मुश्किल होता है ॥

ये जग तो तन का मेला है कदम-कदम तन मिलते हैं ।
'तोष' जगत में मन से मन का मिलना मुश्किल होता है ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

पूनम का चाँद

डॉ० निशा भार्गव

चंडीगढ़, भारत

आज सुबह पूनम का चाँद मेरे घर आया था
चाँदनी के रथ पर सवार उजाला छाया था।
मैंने पूछा कैसे हो तो बोला सफ़र में रहता हूँ
प्रकृति के नियम से बंधा निज कर्म में रहता हूँ।
कभी शिव के शीश पर सुशोभित होता हूँ
कभी किसी सुंदर चेहरे की उपमा बनता हूँ।
कभी किसी चकोर के दिल में धड़कता हूँ।
तो कभी किसी कवि की कल्पना बनता हूँ।
घटते-बढ़ते मेरा रंग रूप बदलता रहता है।
दिन बदलने से मेरा स्वरूप बदलता रहता है।
मैंने पूछा तुम तो रात के मुसाफिर हो
आज दिन में भी क्या सूरज के हमसफ़र हो।
वो मुस्कुरा कर बोला बस जा रहा था
जाते जाते मगर ये ख़याल आ रहा था।
अभी अंधेरा है कुछ और उजाला कर जाऊँ
सूरज से मिलके शायद मैं कुछ और निखर जाऊँ।
ये कायनात सदियों से यूँही चल रही है
हर रोज़ दिन निकलता है रात ढल रही है।
यूँ तो दिन-रात के हमसफ़र अलग होते हैं।
एक राह चलते वो कभी कभी मिल जाते हैं।
कुछ साथ रह कर भी अनजान बने रहते हैं
कुछ अचानक मिल कर हमसफर बन जाते हैं।
सबको अपने अपने ज़मीं -आसमां मिले हैं
अपनी मंज़िलें और अपने कारवाँ मिले हैं।
यह ज़िंदगी भी एक सफ़र है मुख्तसर सा
मुसाफिर मिलते हैं चंद रोज़ बिछुड़ जाते हैं।
क्या पता कब एक दूसरे से दूर हो जाएं
क्यों न मिल कर उस ईश्वर का नूर हो जाएँ।
क्यों न मिल कर उस ईश्वर का नूर हो जाएँ।

क्या माँगूँ वरदान

निस-दिन जिनको याद करूँ मैं
समक्ष खड़े वो राम
मैं उनसे क्या मांगूँ वरदान !

उनके मुख पर खेल रही है
मंद मंद मुसकान।
प्रभु की महिमा कैसे समझूँ
मैं अज्ञानी अनजान।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

उनकी कर्तव्यपरायणता,
उनका त्याग महान
क्या क्या उपमा दूँ उनको
मेरे राम गुणों की खान।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

धैर्यवान हैं क्षमाशील हैं
कौशल्या के राम
मर्यादा पुरूषोत्तम हैं उनको
सुख दुख एक समान।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !
मेरी नौका बीच मँझधार
उनकी महिमा अपरम्पार।
कर देंगे भव सागर पार
मैं भजूँ राम का नाम।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

उनका सेवक जो बन जाता
उनके रंग में वो रंग जाता।
मुझ पर दया करें वो रघुवर
कर लूँ उनका ध्यान।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

उनके आगे शीश नवाऊँ
क्या बोलूँ कुछ कह न पाऊँ।
उनकी मोहिनी छवि देख
करूँ कोटि कोटि प्रणाम।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

मेरे मन की अभिलाषा का
उनको है सब ज्ञान।
बिन माँगे सब दे देते हैं
उनकी कृपा महान।
मैं उनसे क्या माँगूँ वरदान !

छाँव

पालम सैनी

ग़ाज़ियाबाद, भारत

आ री विभावरी आ जा
कमनीय सांवरी आ जा
मेरे निभृत्त आँगन में
ठहर आज भर इस वन में

तुम दिवस की अनुगता हो
तिमिर में उलझी एक लता हो
कल सवेरा आएगा तुमको लेने
विरह का दुःख मुझको देने

पर..... आज भर.....

संवार तो लूँ तेरी अलकों को
निखार तो लूँ अपनी पलकों को
मृदुल मुकुल बावरी आ जा
आ री विभावरी आ जा

तेरी गोद में सिर रखकर
कुछ पल विरति में खो जाऊं
सो जाऊं अभिसिप्त नींद
और अचेतन हो जाऊं

कुपित सूर्य के चाबुक से
उखड़ गयी तन की त्वचा
दिग्भ्रान्त दिशा पा जायेगा
पाकर किंचित संवेदना

लेकर...

प्रणय की "छाँव" री आ जा
आ री विभावरी आ जा

मेरी बात ना कहिये

सिर्फ़ नज़रों के मिलने
को मुलाक़ात ना कहिये ।
हलकी सी बूँदा बाँदी है
इसे बरसात ना कहिये ॥

ख़्वाब टूटा भी इसलिए
कि मेरी नींद कच्ची थी ।
बहुत ही आम सी बात
को वारदात ना कहिये ॥

झुकाना सर मेरी आदत में
कुदरती शुमार है मानो ।
बराए मेहरबानी इसको
मेरी औक़ात ना कहिये ॥

ये ज़िन्दगी शतरंज़ की
बाज़ी जरूर लगती है ।
सामने सारे ही अपने थे
इसे शह मात ना कहिये ॥

भटकना बंद गलियों में
एक नयी राह की खातिर ।
वो फैसले सारे ही मेरे थे
इसे हालात ना कहिये ॥

पानी समझकर आग को
मुट्ठी में भर लिया साहब !
वक़्त का सामना करना
ये छोटी बात ना कहिये ।

पसीना खूँ में शामिल है
शहर के लोग क्या जानें ।
लुटा कर गाँव आया हूँ
इसको खैरात ना कहिये ॥

थमा गया कोई सरेआम
यूँ ही मेरे हाथ में पत्थर ।
अब उसके दिल की बात
को मेरी बात ना कहिये ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

वृक्षरोदन

डॉ० गीता गंगोत्री

भारखंड, भारत

ज्यूं ही मुझपे छाई हरियाली,
बेदर्दों ने काट दी डाली,
आग लिए खड़े थे अपने,
बचाने वाले बने थें सवाली ।

सावन के झूले सब रोए,
मोर, पपीहा आंख भिगोए,
झिंगुर सिसक सिसक के गाए,
जीवन नैया कोई बचाएं ।
खंजर, कटर, गड़ासे तज के,
तोता मैना की करो रखवाली ।

बारिश की झड़ियां हुई तीखी,
कटने लगी सब जड़ें अनोखी,
अब सपनों में बस इक जिंदा,
रात ग़ज़ल मेंहदी की लाली ।

सारी नदियां तल के ऊपर,
फिर भी नाव बहे ना जल पर,
मांझी भी अब टुट चुका है,
ढलने लगी जो सांझ की लाली ।

पंख पखेरू के कट आए,
नीड़ हवा ने जो दिए उड़ाए,

अब सांसों में घुल रहा विष है,
दुश्मन लगने लगा है माली ।

गौरया डर से मुरझायी,
तितली कटे पंख सहलाई,
शेर सिंह हाथी सब चीखे,
चंदन, अजगर लिपटे आंखें भींचे,
जल कट गए जीवन जब म्हारे
बनाके महल बजाए तुम ताली ।

सारी सृष्टि, जब मरने वाली,
चिन्ता कौन करे रखवाली ।
पंचायत ने हाथ बढ़ाए,
पोंछें आंसू भरी खुशहाली,
बसा के गांव पेड़ों के फिर से,
मरूस्थल में कर दी हरियाली ।

डॉ० संगीता शर्मा कुंद्रा
"गीत"
चंडीगढ़, भारत

बेटी की विदाई हो रही है

बेटी विदा हो रही है सब यादें यहीं छोड़कर ।
जा रही है दूसरे घर चुनर प्यार की ओढ़कर ।
छोड़ जाएगी कुछ पन्ने लिखे हुए स्टडी टेबल पर ।
और कुछ किताबें, नाम लिखी हुई बुक शैल्फ पर ।
याद आएगी जब दिखेगें दीवार पर लगी पेंटिंग पे नाम ।
और कभी जो करती थी यहां रहते हुए वो काम ।
याद आएगा शाम होते ही वो मेरे लिए चाय बना कर रखना ।
और जरा सी देर होने पर झट फोन मुझको करना ।
रसोई में रखी नये दौर की लाई उसकी चीजें ।
बैठक को सजाने के उसके अलग से सलीके ।
याद आएगी जब दिखाई देंगे अलमारी में उसके कपड़े ।
और होते थे छोटी-छोटी बात पर जो प्यारे झगड़े ।
पड़ जाएगी कभी शोकेस में रखे मैडलों पर नजर ।
और कभी मेरे ही पुराने सैंडलों पर ।
जब पैरों को उनको डाल मटकती थी ।
और फिर खुश होकर होकर मचलती थी ।
जब याद आएगी उसकी तो सब कहेंगे ।
आओ राज दुलारी की सी डी देखते हैं ।
बड़े मजे से बातें करते देखेंगे उसको सब ।
पर विदाई का सीन आते ही पिताजी वहां से हो जाएंगे गायब ।
सोचेंगे वह जो मैंने 20–25 वर्ष पौधा पाला था ।
वह तो शोभा था किसी और के ही आंगन का ।

ग़ज़ल

याद है बात मुझको तो उस रात की ।
वो सुहानी वो प्यारी मुलाकात की

अपना मिलना भी फिल्मों का इक सीन था ।
याद है आज भी रात बरसात की ।

टीस जो थी उठी तब बिछड़ने पे थी ।
जाते-जाते न तुमने थी कुछ बात की ।

फिर मिलेंगे पता ये नहीं था हमें ।
ऐसे बदलेगी तस्वीर हालात की ।

जीत जाए कभी वो मेरे सामने ।
बात है ये नहीं उनकी औकात की ।

जो सितम उसने हम पर किये प्यार में ।
क्या सुनाऊँ कहानी वो जुल्मात की ।

जो नहीं जानते प्यार होता है क्या ।
बात वो क्या करेंगे जी जज्बात की ।

वो हराने चले "गीत" को चाल से ।
बाजी उल्टी पड़ी उन पे शह मात की ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

प्रतीक्षा

(लघुकथा)

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

दिल्ली, भारत

सुनंदा का गठबंधन तो दसवीं में उसके नाना ने अपने मित्र के पोते के साथ कर दिया था पर गौना बारहवीं की परीक्षा के बाद ही होना निश्चित हुआ था । बारहवीं के परिणाम आने ही वाले थे और सुनंदा का मन अनेक आशंकाओं से घिरा था । सुनंदा एक होनहार बालिका थी और आगे पढ़ना चाहती थी । परन्तु पिता के गुज़र जाने के बाद से ही उसकी माँ और वह नाना जी के घर पर रह रहे थे और उन्हीं पर निर्भर थे । नाना जी की अवस्था देखते हुए वह उनसे भी कुछ नहीं कह पा रही थी । पहले ही वे उन लोगों के लिए वृद्धावस्था में जूझ रहे थे।अंतत: वह घड़ी आ ही गई, आज उसका गौना था । माँ के चेहरे पर एक सुकून था और नानाजी भी बहुत खुश थे । ईश्वर ने अनजाने में जो उत्तरदायित्व उन पर डाल दिया था, आज वह उससे मुक्त होने वाले थे । बस एक सुनंदा थी जो अपने अनिश्चित भविष्य को लेकर चिंतित थी ।

खैर उदास व बोझिल मन से उसकी विदाई हुई । ससुराल आई और तब वह हक्की-बक्की रह गई जब उसके पति ने मुँह दिखाई स्वरूप उसके हाथ में दिल्ली विश्व विद्यालय का प्रवेश पत्र थमा दिया। उसे कल ही अपनी आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाना था । वह खुश भी थी और हैरान भी जब पति राहुल ने कहा कि "तुम अपनी पढ़ाई पूरी करो और फिर अपने ज्ञान सौरभ से मेरा आँगन महकाना, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा ।" आज भी जीवन की वे खट्टी मीठी यादें सुनंदा को रोमांचित कर देती हैं ।

डॉ० दलजीत कौर

चंडीगढ़, भारत

छोड़ दिया मैंने

छोड़ दिया मैंने
दूसरों की कसौटी पर
खरे उतरना
छोड़ दिया मैंने
गहराई में गहरे उतरना
मैं अब मन की करने लगी हूँ

अपनी कठपुतली का धागा
मैंने तोड़ लिया
अपने रास्तों को
मैंने मोड़ लिया
मैं अब मन की करने लगी हूँ

विश्वास किसी पर
मैं नहीं करती
किसी की बातों पर
मैं नहीं चलती
मैं अब मन की करने लगी हूँ

कच्चे थे जो धागे
उनको तोड़ लिया
नाता मैंने खुद का
खुद से जोड़ लिया
मैं अब मन की करने लगी हूँ

मरने के लिए
जरूरी है जीना
मर -मर कर जीना
मैंने छोड़ दिया
मैं अब मन की करने लगी हूँ

लघुकथाएँ

रद्दी

वह बहुत खुश था कि अपनी किताब ज़िलाधिकारी को देकर आया । वह किताब ही क्या जो बड़े-बड़े अफ़सरों के पास न पहुँचे । उनके साथ फ़ोटो न खिंचवाए । घर आते ही उसने अपनी फ़ोटो फ़ेसबुक पर डाल कर दुनिया के सामने साबित कर दिया कि वह कितनी पहुँची हुई चीज़ है ।

उधर शाम को अफ़सर को घर जाते हुए चपरासी ने पूछा - सर ! इन किताबों को गाड़ी में रखवा दूँ ?

अफ़सर ने गम्भीरता से उसकी ओर देखकर कहा - मैं इनका क्या करूँगा ?

तुम रद्दी में दे देना । तुम्हारा चाय-पानी निकल जाएगा ।

साहित्य

रिटायर होने के बाद समय बिताने के लिए वह लेखिका बन गई । काव्य -गोष्ठी में कविता सुनाने तक तो ठीक था । दूसरों को देखकर अब उसे पत्रिकाओं में भी छपना था । मगर किसी अच्छी पत्रिका में तुकबंदी का छपना संभव नहीं हो रहा था ।

अब वह हर बार पैसे दे कर पत्रिका में कोई कविता छपवा लेती है । फ़ेसबुक कर डालने के लिए ।

उसके उच्च पदासीन पति भाषण में कहते हैं साहित्य बहुत तरक्क़ी कर रहा है ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

आम चुनाव

बी एल गुप्ता
गाज़ियाबाद, भारत

जैसे जैसे चुनाव का समय नजदीक आया ।
आम तो कहीं नज़र नहीं आया पर,
खास छुटभैयों को समाज के कार्यों में व्यस्त पाया ।
हर छोटी-बड़ी समस्याओं को लेकर बोलते नज़र आये ।
जैसे मौसम बदलते ही मच्छर भुनभुनाये ।
सबसे नमस्ते बड़ों के चरणों पर झुकना ।
सौ कदम चलने पर पचास जगह रुकना ।
अपनी पार्टी विशेष की वकालत करना ।
और फिर अपनी कोई झूठ ही कहानी गढ़ना ।
येन केन प्रकारेण आपको बताना ।
आपका हमदर्द होने का अहसास कराना ।

पार्टी ने मुझे दिया है टिकट ।
मैं हूँ हर समय आपके निकट ।
आपके क्षेत्र की सारी समस्याए होंगी दूर ।
मुझे बस चाहिये आपका समर्थन भरपूर ।
एक बार मुझे सेवा का मौका दीजिए ।
सबको आजमाया, मुझे भी आजमा लिजिए ।
पांच साल में सबको कर दूंगा खुशहाल ।
परिवार, रिश्तेदार, सब हो जायेंगे मालामाल ।
आपके सहयोग से ही यह सम्भव हो पायेगा ।
आपका आशीर्वाद ही शिखर तक पहुंचाएगा ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

नीतू गर्ग
ग्रेटर नोएडा,
भारत

गीता की वाणी

हर युग में दुविधा में फँसा जब पार्थ होगा,
तम को चीर ज्ञान का नूतन प्रकाश होगा
जो गीता सुनाई थी द्वापर में कृष्णा ने,
पालन उसका ज्ञानार्थ और धर्मार्थ होगा ।

वो आये थे धरा पे बस लक्ष्य यही लेकर,
न्याय के विरुद्ध नीतियाँ भी सामने हो अगर
नीति वो अनीति है,जो विध्वंस का संकेत हो,
अन्याय के विरुद्ध निजो से लड़ो होके निडर

धर्म की रक्षार्थ छल भी करना ना अधर्म है,
अहं को दांव पे नारी का जो अपमान है,
ये गाथाएँ किवंदंती है ,युग युगो युगांतरों,
विनाश का कारण हुआ, मर्यादा का हनन है ।

विनाश का मूल बनी कुवाणी शिशुपाल की,
गलती सौ क्षमा की प्रभु ने उस वाचाल की,
काल किंतु जिसके सर हो सवार अपने ही ,
चक्र चला शीश कटा,महिमा नंद लाल की ।

गीता ज्ञान कृष्ण स्वरूप है अजर अमर ,
अवतार उनका सार इसका जो मन में लो भर,
अवसाद तुमको घेर ले ,जब कोई भी मनुज,
दिशा तुम्हें दिखाएगी, आशा की एक नई लहर ।

साज छेड़ा आपने तो गुनगुनाई धड़कने,
सांस की लय पर, सुनाई दे रही है सरगमें ।

जानी हमने ही नही थी प्रेम की वीणा की धुन,
झंकारो से आ रही अब सुर में तेरी तड़पने ।

एक हम तुम और अपनी रागिनी भी एक है,
गीत कोई भी हो दिल में बस गयी है तरन्नुमें ।

तेरी तानो का असर कुछ यूँ हुआ ए दिलनशी,
घुंघरू बांधे है लगी मन की मयूरी थिरकने ।

प्रेम की अंगड़ाई दस्तक दे रही है ख्वाबों को,
सोये जज्बे अब बदलने लग गये है करवटे ।

सात सुर संग रंग सात और वचन भी सात है,
संग तुम्हारा जैसे पा ली हो खुदा की रहमते।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

देश की खातिर

सुरेश पुष्पाकर

ग्रेट ब्रिटेन

वह लहू भला किस काम का है,
जिसमें उबाल का नाम नहीं ।
वह लहू भला किस काम का है,
आ सके हिन्द के काम नहीं ।
जो वीरगति को प्राप्त हुए,
ये देश नमन करता उनको ।
जो वीर लड़े माटी खातिर,
ये देश नमन करता उनको !
हम याद करें लक्ष्मीबाई,
हम याद करें राणा प्रताप,
हम नमन करें वीर शिवाजी को,
याद करें वीर शहीद सपूतों को,
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह,
जो भूल गये थे फंदे से,
इस देश की माटी की खातिर ।
बर्मा की धरती से नेताजी ने
जब मांगी कुर्बानी थी
इस देश के वीर सपूतों ने
तब खून की कीमत जानी थी ।
तुम्हें सावधान रहना होगा ।
विध्वंशक ये वामपंथ
छलनी करने पर तुले हुए
भारत माँ के आंचल को ।
अब दौर नहीं तलवारों का
पर युद्ध तुम्हें करना होगा
इनके क्षुब्ध विचारों को
नष्ट तुम्हें करना होगा ।
वह लहू भला किस काम का है.....

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

ग़ज़लें
मेरे ज़हन से

आरके भगत

चंडीगढ़, भारत

नज़रों में तेरी हम आकर रहेंगे ।
दिल ज़िगर पर तेरे छाकर रहेंगे ॥
बादल है हम, तो बरसेंगे ही,
देख के दुनिया वाले तरसेंगे ही ।
मुहब्बत जिसका नाम सुना है,
सपनों का जिसने जाल बुना है ।
सीने से इक दिन लगाकर रहेंगे ।
नज़रों में....
ख़ामोश लबों पर आएं तराने,
दिल की धड़कन,दिल ही जाने ।
गीत बने हैं ,बने अफ्सान ।
बीत न जाएं दिन ये सुहाने ।
आशियांअपना सजाकर रहेंगे ।
नज़रो में....
फूलों की रंगत, कलियों की खुशबू,
देखें जिधर भी हम,है तू ही तू ।
पल भर सांसें, थम जाती हैं,
नाम में जिंदगी,रम जाती है ।
बेखुदी में खुद को मिटाकर रहेंगे ।
नज़रों में.....

पुरजोर हिमायत करते हैं ।
जो इश्क में जीते मरते हैं ।
आंखों से पिलाने की बात करो,
हम पीने से नहीं डरते हैं ।
वोह बन्दिशे लगाते फिरते हैं,
हम ये नहीं ग्वारा करते हैं ।
छलके जब ये जामे-हयात,
हम उन को पुकारा करते हैं ।
दिन रात तमाशा होता है,
छुप-छुप के आहें भरते हैं ।
तेरे रहमों कर्म का, ऐ साकी !
घुट-घुट के नज़ारा करते हैं ।
रुसवा कहीं न हो जाओ तुम,
रुक रुक के इशारा करते हैं ।
जो माकूल खुदा ने हुस्न दिया,
हम दीद ग्वारा करते हैं ।
काश ! हमारे हो जाते वोह,
हम फरियाद इंदारा करते हैं ।
भगत हुस्न से मिल कर सब,
तकदीर संवारा करते हैं ॥

शांति की प्यास

नीरू मित्तल 'नीर'

पंचकूला, भारत

सुबह की लालिमा छाई नभ में
भोर ने फिर दस्तक दी जग में
टपकी बूंद बूंद शुभ्र ओस की
उसकी कृपा बरसेगी हर पल
यह आस दिल में बनाये रखिये

बारिश की बूंदों से नहाया पत्ता पत्ता
घुमड़ते बादल, भीगा भीगा सा रास्ता
इंद्रधनुष सा बिखरा हर दिल पर
मीठा प्रेम प्यार हर दिल में बसता
उसकी कृपा में है कमी नहीं कोई
परम शांति की प्यास जगाये रखिये

सांझ हुई थके पक्षी लौटे अपने घर
भौंगुर चहके, कलरव कुछ हुए प्रखर
रम्भाती गाय से मिलते नन्हे बछड़े
माँ की गोद में नन्हे मुन्ने गये पसर
रहेगी न अब अधूरी, आस होगी पूरी
यह अहसास दिल में सजाये रखिये

पीछे गुलमोहर के, झांका चांद पूनम का
निखरा निखरा रूप हुआ प्रकृति का
बिखरी चांदनी, सब उजला उजला है
जैसे मजा आ रहा हो इस जीवन का
हर पल जीवन का आन्नदित होगा
सुर-ताल की महफिल सजाए रखिये

जवाब
(लघुकथा)

जैसे ही मैं दर्शन करके मंदिर से बाहर आई, भिखारी बच्चों ने मेरी गाड़ी को घेर लिया। पति बड़बड़ाने लगे- "पैदा होते ही हाथ में कटोरा देकर बिठा देते हैं। अरे! पाल नहीं सकते तो पैदा ही क्यों करते हैं ?"

मैंने खिड़की का शीशा ज़रा सा नीचे कर पास खड़े एक आठ-दस साल के बच्चे से कहा- "तुम पढ़ते लिखते क्यों नहीं ? भीख माँगना अच्छा काम है क्या ?"

वह बच्चा सूनी सी आँखों से मेरी तरफ देखने लगा, फिर बोला "मैडम जी पढ़ने का तो बहुत मन करता है... पर पढ़ाई से पेट नहीं भरता... बिस्तर पर पड़े बूढ़े बाप की दवाई नहीं आती... अमीर घर में नहीं पैदा हुए ना मैडम जी... हमें तो पैदा होते ही अपने लायक खुद ही कमाना पड़ता है।"

और एक सलाम ठोक कर वहाँ से चला गया।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अनुत्तरित स्थिति

(कोरोना के समय की)

सुषमा मल्होत्रा

न्यू यॉर्क

इमारतें विशालकाय और आलिशान
हो गई हैं कितनी खाली व परेशान,
ऊँची थी मगर, अब दिखती हैं बौनी सी
इन सब को, हे प्रभु मैं कैसे देखूं।
उत्सव और रौनक इस शहर की
जो प्रतिष्ठित है प्रसिद्ध विश्व भर में,
वे असामयिक कहाँ गुम हो गई
उन सुंदर दृश्यों को मैं अब कैसे देखूँ।
बच्चों की प्यारी प्यारी किलकारियां
सदा खिलखिलाते और मुस्कुराते हुए चेहरे,
सब जा छिप गए घरों के भीतर
बाहर निकले तो ही मैं उनको देखूं।
कितने मौसम कितनी ऋतुएं बदली
बसंत, ग्रीष्म, पतझड़, व् शीत,
सबका रहा इक सहमा सा वातावरण
जीने की चाह इनमें मैं कैसे देखूं।
प्रतिदिन आगमन रवि का आकाश में
धीरे धीरे रेंगते हुए संध्या का आना,
करती हुई इंतज़ार शशांक संग तारागण का
बिन चाँद शशि के नभ को मैं कैसे देखूँ।
आम खास लोगों का एकाएक पलायन
घर बदलना या फिर शहर छोड़ना,
और कहीं दूर दूर जा कर बसना
शहर का यह खालीपन मैं कैसे देखूँ।

देश में एक महामारी का प्रकोप
ऊपर से चुनाव के झमेले निःसंकोच,
चमड़ी का रंग और पैसे की होड़
खोने और हारने का क्रंदन मैं कैसे देखूँ।
खिड़कियों से झांकती शीत धूप
शुन्य में अस्पष्ट बिखरते हुए स्वर,
आवाज़ों को तरसते हुए कान
प्रतिवेश में स्वर सुनने को मैं किधर देखूँ।
त्यौहार आये और सबने मनाये
क्रिसमस और दिवाली के दीप जलाये,
सबने किया यह एकमात्र एकाकीपन में
फिर उनको मनाने का मैं बहाना देखूँ।
प्रार्थना करूँ जोत प्रतिदिन जलाऊँ
सर्वस्व विश्व को कर समर्पित, करूँ मैं नमन,
विश्वास और आशा करें, स्वस्थ हो सब रहें प्रसन्न
मुस्कुराते चेहरे शीघ्र "निर्मल-रोशन" ही देखूँ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

कवितावली